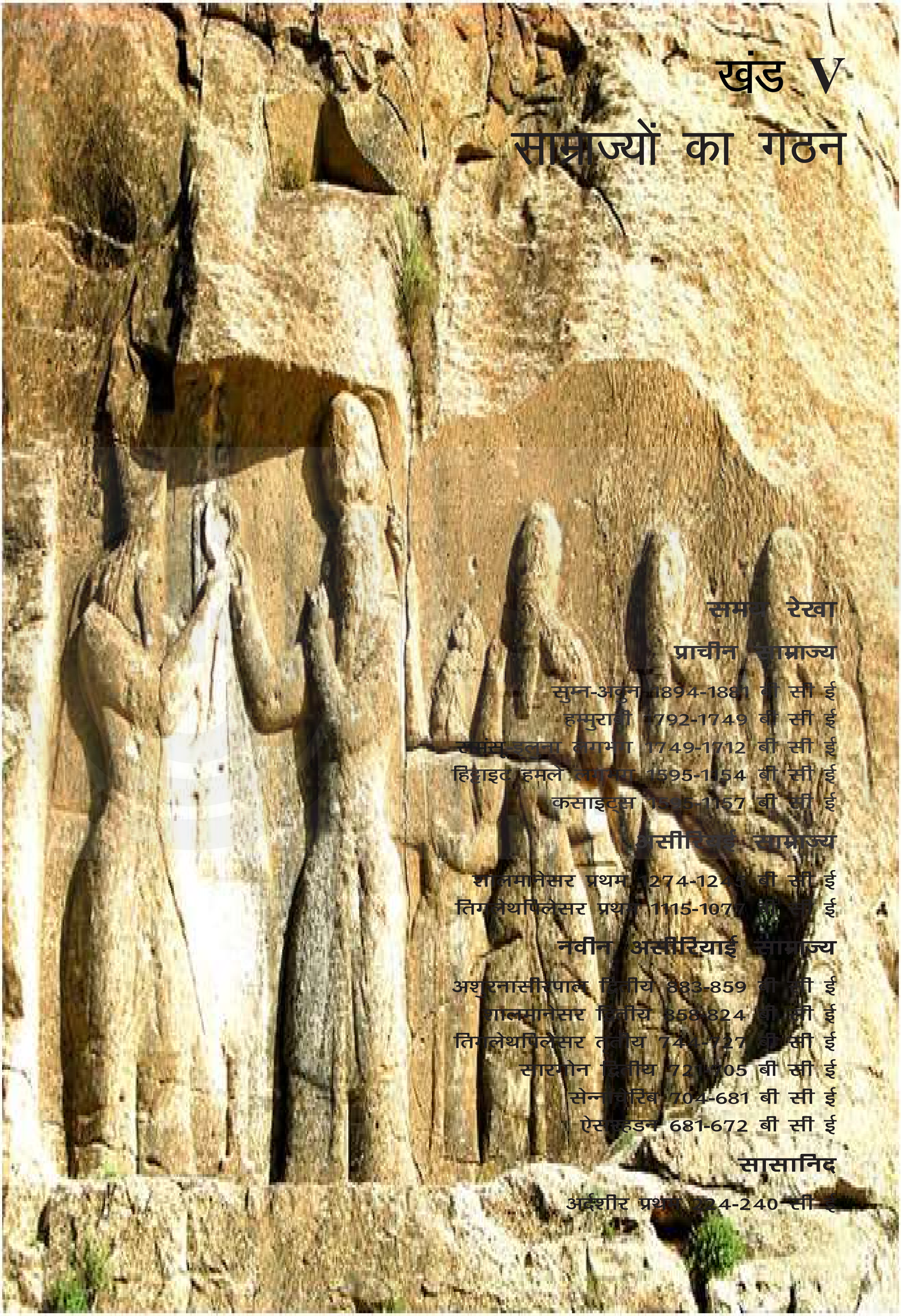

खंड V

साम्राज्यों का गठन

समय रेखा

प्राचीन साम्राज्य

सुम्न-अबुन 1894-1881 बी सी ई
हम्मुराबी 1792-1749 बी सी ई
समसु-इलुना लगभग 1749-1712 बी सी ई
हिट्टाइट हमले लगभग 1595-1154 बी सी ई
कसाइट्स 1595-1157 बी सी ई

असीरियई साम्राज्य

शालमानेसर प्रथम 1274-1245 बी सी ई
तिगलेथपिलेसर प्रथम 1115-1077 बी सी ई

नवीन असीरियाई साम्राज्य

अशुरनासीरपाल द्वितीय 883-859 बी सी ई
शालमानेसर द्वितीय 858-824 बी सी ई
तिगलेथपिलेसर तृतीय 744-727 बी सी ई
सारगोन द्वितीय 721-705 बी सी ई
सेन्नाचेरिब 704-681 बी सी ई
ऐसरहडन 681-672 बी सी ई

सासानिद

अर्दशीर प्रथम 224-240 सी ई

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

चित्रांकन: अर्दशीर प्रथम की नक्काशीयुक्त पट्टिका, फिरुज़ाबाद, फ्रांस, ईरान

फोटोग्राफ: मिलाद वान्डेई

स्रोत: https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Ardashir_i%27s_relief_at_Firuzabad]Fars,_Iran,_JPG

इकाई 12 साम्राज्यों का गठनः असीरियन और बेबीलोनियन*

इकाई की रूपरेखा

12.1 उद्देश्य

12.2 प्रस्तावना

12.3 बेबीलोनियन साम्राज्यः उदय और क्षेत्रीय विस्तार

12.4 असीरियन साम्राज्य

12.4.1 क्षेत्रीय विस्तार

12.4.2 प्रशासनिक और सैन्य व्यवस्था

12.5 असीरिया का विभाजन और बेबीलोनिया के साथ संघर्ष

12.6 समाज और अर्थव्यवस्था

12.6.1 सामाजिक-आर्थिक विशेषताएं

12.6.2 सांस्कृतिक विशेषताएं

12.7 सारांश

12.8 शब्दावली

12.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

12.10 संदर्भ ग्रंथ

12.11 शैक्षणिक वीडियो

12.1 उद्देश्य

पिछली इकाई में आपने मध्य और पश्चिमी एशिया के खानाबदोश समूहों के बारे में पढ़ा। यह इकाई बेबीलोनियन और असीरियन साम्राज्यों पर केंद्रित है। यहां आपका परिचय मेसोपोटामिया के क्षेत्र में साम्राज्यों के गठन से होगा। इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- बेबीलोनियन और असीरियन साम्राज्यों की स्थापना की प्रक्रिया को समझ सकेंगे,
- उन कारकों की पहचान कर सकेंगे जिन्होंने साम्राज्यों के विस्तार में सहायता की,
- साम्राज्यों की सामाजिक-आर्थिक विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगे,
- साम्राज्यों की सांस्कृतिक विशेषताओं को समझ सकेंगे, और
- साम्राज्यों की वृद्धि एवं विकास और उनके पतन के चरणों को समझ सकेंगे।

12.2 प्रस्तावना

लगभग 1800 बी सी ई से एक नई राजनैतिक संरचना स्वरूप में आई जिसे 'साम्राज्य' कहा जा सकता है। इस राजनैतिक संरचना की उत्पत्ति पश्चिमी एशिया में हुई। ये विस्तृत क्षेत्र

* डॉ. जीना जैकब, सेंटर फॉर हिस्टॉरिकल स्टडीज़, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

में फैली हुई थीं, और अधिकतर साम्राज्यों की प्रकृति राजतंत्रीय थी। इन राज्यों में सेना के संसाधनों की कमी नहीं थी तथा भेंटों के रूप में राज्य कार्य के लिए धन एकत्र करके साम्राज्य की केन्द्रीय सत्ता को भेजा जाता था। ये साम्राज्य कुलीन समूहों द्वारा चलाए जाते थे जो कि साम्राज्य के केंद्र में स्थित थे। केंद्र में राजधानी और उसके आस-पास के क्षेत्र शामिल थे हालांकि परिधीय प्रदेशों और अन्य स्थानों में रहने वाले लोग साम्राज्य की राजधानी से दूर थे, परन्तु वे भी सत्ताधारी वर्ग का हिस्सा थे, लेकिन सत्ताधारी वर्ग में बहुलता केन्द्र प्रदेशों से थी और उनके एक दूसरे से नातेदारी और रिश्तदारी के सम्बंध थे जो कि सजातीय या एक ही कबीले के होने के कारण थे।

भौगोलिक रूप से विस्तृत और सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक रूप से विविधता वाले प्रदेश, जो साम्राज्य का हिस्सा थे, में विभिन्न व्यवस्थाओं को एक जगह पर सही ढंग से व्यवस्थित करने की आवश्यकता थी। इसके लिए कर व्यवस्था, विस्तृत नौकरशाही ढांचा और स्थाई सेना व्यवस्थित की गई थी। न्याय व्यवस्था को साम्राज्य के सभी समुदायों की आवश्यकताओं को पूरा करने की ज़रूरत थी जिनमें से सभी समाज में उन्नति के स्तर पर नहीं पहुँचे थे। साम्राज्य के विस्तृत होने के कारण कई प्रदेश जो केन्द्र क्षेत्र से बाहर थे उन्हें स्वयं आंतरिक समस्याओं को हल करने की शक्ति के साथ, जब तक वे नियमित रूप से भेंट जमा करते रहते थे तब तक उन प्रदेशों का शासन चलाने की अनुमति थी। कई बाहरी परिधीय क्षेत्र जो पूर्ण नियंत्रण में नहीं थे उन्हें बार-बार सैन्य हस्तक्षेप द्वारा सुदृढ़ बनाने की आवश्यकता थी।

साम्राज्य की उत्पत्ति स्थाई सैन्य बल की ताकत पर विस्तारण की आवश्यकता से हुई थी। निरंतर विस्तार के द्वारा सत्ताधारी उच्च वर्ग ने शक्ति के द्वारा अपनी पद-प्रतिष्ठा को बनाकर रखा और अधिकतर विस्तृत प्रदेशों पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया। उस समय परिस्थिति यह थी कि साम्राज्य जितना बढ़ता था उतने ही अधिक संसाधनों पर उसका नियंत्रण होता था। साम्राज्य के आकार और विस्तार के अनुसार ही उसे उतनी ही बड़ी स्थाई सेना की आवश्यकता थी। इतनी बड़ी सेना के रखरखाव के लिए बड़ी मात्रा में संसाधनों की आवश्यकता थी। इसलिए, साम्राज्य के विस्तार, भेंटरूपी शुल्क का संकलन और सेना के रखरखाव के बीच में एक मूलभूत कड़ी थी।

पश्चिम एशिया में साम्राज्य का निर्माण करने का प्रयास लगभग 1800 बी सी ई के आसपास हुआ था। मेसोपोटामिया में पहले बेबीलोनिया के लोगों ने साम्राज्य स्थापित करने की प्रक्रिया शुरू की। हिट्टियों ने उनका अनुसरण करते हुए इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाया। हिट्टियों के आक्रमणों ने अंततः बेबीलोनियाई साम्राज्य का अंत कर दिया। कई शताब्दियों और लम्बे समय तक चलने वाला बाद का असीरियन साम्राज्य यह सुनिश्चित करता है कि मेसोपोटामिया साम्राज्य उस क्षेत्र में विविध प्रकार के आरंभिक साम्राज्यों के लिए एक प्रतिरूप की तरह रहे।

12.3 बेबीलोनियन साम्राज्यः उदय और क्षेत्रीय विस्तार

बेबीलोन (बब-इलानी, जिसका अर्थ है 'देवताओं का द्वार') उन एमोराई बसावटों में से एक है जो उत्तरी मेसोपोटामिया और सीरिया में अक्काड़ में उभरा[1] एमोरी, एक बहुत बड़ी जनजाति का भाग थे जो कि पश्चिमी सैमाइटिक के तौर पर पहचानी जाती थी, वे प्राचीन बेबीलोनियाई साम्राज्य के विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण थे। साम्राज्य की कार्यकारी भाषा अक्केड़ियन थी और बहुत लम्बे समय तक मेसोपोटामिया की भी मुख्य भाषा बनी रही। सुमेरियन और सुमेरो-अक्केडियन सभ्यताओं की धार्मिक प्रथाओं और विशेष गुण जैसे कि कीलाक्षर (cuneiform)

[1] एमोरी सैमाइटिक (Semitic-speaking) भाषी लोग थे जिन्होंने दक्षिणी मेसोपोटामिया में 21वीं शताब्दी बी सी ई से 17वीं शताब्दी बी सी ई तक अनेक नगर-राज्य स्थापित किए और उन पर शासन किया।

लिपि एमोरियाई लोगों ने अपनाई। सार्गों (लगभग 2334 बी सी ई) और उर (लगभग 2094-2047 बी सी ई) के तीसरे वंश के राजा जैसे शक्तिशाली सुमेरियन और अक्काडियन शासकों से प्रभावित होकर बेबीलोनिया साम्राज्य ने राजतंत्र परंपरा को अपनाया।

पहले वंश के दौरान प्राचीन बेबीलोनियाई साम्राज्य बहुत महत्वपूर्ण बन गया था जिसकी स्थापना सुमु-अबुम (लगभग 1894-1881 बी सी ई) ने की थी। छठे शासक प्रसिद्ध हम्मुराबी (शासन 1792-1749 बी सी ई), के शासन काल के दौरान दक्षिण मेसोपोटामिया एकीकृत किया गया और साम्राज्य उत्तरी मेसोपोटामिया के बहुत बड़े भाग में फैल गया। उसका साम्राज्य इरीदू, उर, लागाश, ज़बलाम, लार्सा, उरुक, अदाब, ईसिन, निपुर केशी, दिलबत, बोर्सिप्पा, बेबीलोन, कीश, मैलगियम, मशकाम, शापिर, कुथा, सिपर, इशनुन्ना, मारी और तुल्तुल नगरों को अपने में सम्मिलित किए हुए था। उसके उत्तराधिकारी समसु-इलुना (लगभग 1749-1712 बी सी ई) ने और अधिक प्रदेशों जिनमें दक्षिण में ईदा-मरास, ईमुतबले, उरुक और ईसिन को मिलाकर साम्राज्य को अधिक विस्तृत किया। यद्यपि उसके शासन काल के पश्चात् साम्राज्य का पतन हो गया। बेबीलोनिया हिट्टियों (लगभग 1600 बी सी ई) द्वारा दक्षिणी मेसोपोटामिया पर आक्रमण तक महत्वपूर्ण राजनीतिक केन्द्र बना रहा, इसी कारण इस क्षेत्र को बेबीलोनिया के रूप में जाना जाता था जिसका सम्बंध प्राचीन बेबीलोनिया साम्राज्य से था।

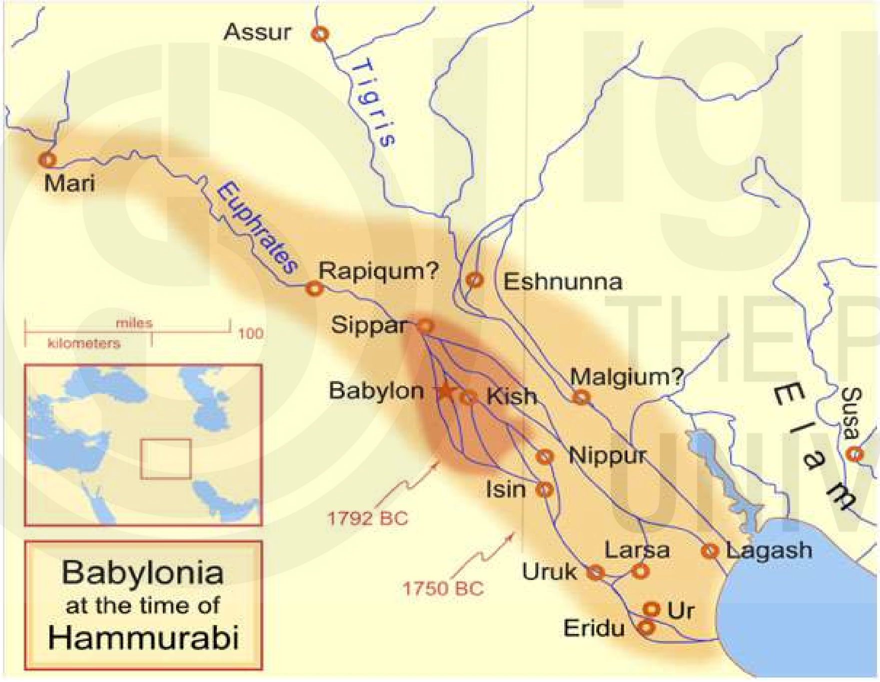

मानचित्र 12.1 : हम्मुराबी शासन काल के दौरान बेबीलोनियाई साम्राज्य की सीमा
साभारः मेप मास्टर, 2008

स्रोतः https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/1/12/Hammurabi%27s_Babylonia_1.svg

लगभग 1600 बी सी ई के दौरान हिट्टियों के आक्रमणों ने प्राचीन बेबीलोनिया साम्राज्य का पतन कर दिया।[2] कैसाइट्स (Kassites; अक्काडियन दस्तावेज़ों के अनुसार इन्हें कांषु के नाम से भी जाना जाता था) लोगों ने हिट्टियों के आक्रमण का लाभ उठाते हुए, ज़ाग्रोस पहाडों से उतर कर, मेसोपोटामिया में नए साम्राज्य को स्थापित किया जो कि 1595-1157 बी सी ई तक अस्तित्व में रहा। कैसाइटों ने मेसोपोटामिया की परंपराओं को बनाए रखा और इसमें घोड़ा पालन कौशल भी जोड़ दिया। उन्होंने मेसोपोटामिया में घोड़े के प्रयोग को प्रचलित किया। दक्षिण मेसोपोटामिया में कैसाइट्स शक्तिशाली थे, उत्तर में कई समूहों का नियंत्रण था, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण लगभग 1350 बी सी ई तक मित्तानी थे।

[2] हिट्टियों का सम्बंध प्राचीन अनातोलिया से है। 15वीं शताब्दी बी सी ई में ये उत्तरी लेवांट और उत्तरी मेसोपोटामिया के शासक बन गए।

12.4 असीरियन साम्राज्य

1350 बी सी ई के दौरान पश्चिम एशिया में असीरिया का एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में आविर्भाव हुआ। असीरियाइयों द्वारा स्थापित विशाल साम्राज्य का पश्चिम एशिया के इतिहास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा और इसने 'साम्राज्यों के काल' को स्थापित किया।

जैसा कि ऊपर बताया गया है, उत्तरी मेसोपोटामिया क्षेत्र में **सैमाइट** समूहों की गतिविधियां बहुत अधिक थीं।[3] कुछ समूह जो ऊपरी टाइग्रिस क्षेत्र में बस गए वे असीरियन कहलाए। यह ध्यान रखना चाहिए कि 'असीरियाइयों' ने सैमाइट और स्थानीय लोगों को मिलाकर नया मिश्रित समूह बनाया। असीरिया नाम उनके सबसे महत्वपूर्ण देवता अश-शुर के नाम से लिया गया है। आधुनिक इतिहासकार शहर को 'असुर' और इसी तरह साम्राज्य को 'असीरिया' और लोगों को 'असीरियाई' कहते हैं।

12.4.1 क्षेत्रीय विस्तार

असीरिया के उत्थान के पहले चरण में महत्वपूर्ण प्रादेशिक विस्तार देखा जा सकता है। मित्तानी शासन (लगभग 1500-1300 बी सी ई) उत्तरी मेसोपोटामिया से खत्म होने लगा, असीरियाइयों ने ऊपरी टाइग्रिस क्षेत्र में 1300 बी सी ई के दौरान नियंत्रण कर लिया और पश्चिम की ओर सीरिया की तरफ मुड़ गए जो कि शालमानेसर प्रथम (1274-1245 बी सी ई) के शासन के अधीन था। यह टिगलाथपिलेसर प्रथम (1115-1077 बी सी ई) का शासन काल था जिस समय सीरिया और बेबीलोनिया की पराधीनता और इसके साथ ही लेबनान के तट पर फीनीशियन्स से भेंट के रूप में धन प्राप्ति के कारण ही असीरिया पश्चिमी एशिया में महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में उभरा।

हालांकि, नए-नए स्थापित हुए इस साम्राज्य को एक महत्वपूर्ण समस्या का भी सामना करना पड़ा जो कि दसवीं शताब्दी बी सी ई में जनजातियों द्वारा आक्रमण के रूप में आई, जिसका दमन इन्होंने 900 बी सी ई के आसपास किया। हालांकि, इसे अशुरनैपाल द्वितीय (883-859 बी सी ई) द्वारा स्थापित 'नए असीरियन साम्राज्य' द्वारा सुलझाया जा सका। असीरिया को उसके मूल आकार में टिगलाथपिलेसर प्रथम के काल के बराबर पुनःस्थापित करने के उद्देश्य से अशुरनैपाल द्वितीय ने सीरिया की ओर बढ़ते हुए उत्तरी मेसोपोटामिया पर अपना नियंत्रण मज़बूत किया। असुर के पास इसने नया शहर कल्हु (आधुनिक निमरुद) बनाया, जिसे उसने अपनी राजधानी बनाया। आरमेनिया, सीरिया, फिलिस्तीन और फारस की खाड़ी के आसपास के प्रदेशों में सैनिक अभियानों के बावजूद उसका उत्तराधिकारी शालमानेसर तृतीय (858-824 बी सी ई) साम्राज्य को बढ़ाने में असफल रहा। यद्यपि वह सीरिया को अपने साम्राज्य में मिलाने में असफल रहा, बेबीलोनिया ने नाम मात्र के लिए असीरियन आधिपत्य को स्वीकार कर लिया। शालमानेसर तृतीय के पश्चात् असीरिया की शक्ति कई दशकों तक पतन की ओर अग्रसर रही, लेकिन टिगलाथपिलेसर तृतीय (744-727 बी सी ई) के शासन काल में असीरिया का पुनरुत्थान हुआ।

बेबीलोनिया पर नियंत्रण को सुदृढ़ करने के साथ-साथ टिगलाथपिलेसर तृतीय ने असीरियन अधिकार क्षेत्र को, सीरिया और फिलिस्तीन के महत्वपूर्ण क्षेत्रों को मिलाकर, विस्तृत किया। पूर्व की ओर भी विस्तार किया गया, टिगलाथपिलेसर तृतीय ने ज़ाग्रोस पर्वतों को पार करते हुए उस समय मेदिया नाम से पहचाने जाने वाले ईरान पर भी नियंत्रण कर लिया। टिगलाथपिलेसर तृतीय के शासन काल के दौरान असीरियन साम्राज्य का विस्तार कैस्पियन

[3] सैमाइट समूह मुख्य रूप से उन सजातीय और सांस्कृतिक समूहों को कहा जाता था जो कि सैमाइट (पश्चिम और उत्तरी अफ्रीका में बोली जाने वाली अफ्रो-एशियाई परिवार की भाषाएं) भाषाएं बोलते थे। जातीयता के आधार पर वे कॉकेशियन जाति से संबंधित थे।

सागर से लेकर भूमध्यसागर तक और ज़ाग्रोस और टॉरस पर्वतों से फारस की खाड़ी तक बढ़ गया था। असीरिया की शक्ति टिगलाथपिलेसर के उत्तराधिकारी सारगॉन द्वितीय (721-705 बी सी ई) के शासन काल में और अधिक बढ़ी। 626 बी सी ई में बेबीलोनिया में असीरियन शासन के विरूद्ध विद्रोह भड़क उठा जिससे सारगॉन के उत्तराधिकारों के शासन का विघटन होने लगा जिसका विवरण बाद में विस्तार से दिया जाएगा। 612 बी सी ई में असीरिया के महत्वपूर्ण शहर निनेवेह (निनुआ) पर बेबीलोनिया और मेदियों के संयुक्त सैन्य बल ने नियंत्रण कर लिया।

मानचित्र 12.2 : नवीन-असीरियाई साम्राज्य (934-911 बी सी ई) के विस्तार के विभिन्न चरण

साभारः सेमहर, 2010

स्रोतः https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/7/7c/Empire_neo_assyrien.svg

12.4.2 प्रशासनिक और सैन्य व्यवस्था

टिगलाथपिलेसर तृतीय ने अपने शासन काल में जिस तरह स्थिरता को संगठित किया वह उसके द्वारा कुशलता से संचालित सेना की प्रकृति और प्रशासनिक व्यवस्था के कारण ही संभव हुआ। उसने इस बात का अनुभव किया कि अगर वह कुशल शासन स्थापित करना चाहता है तो वह स्वयं अपने हाथ में पूरी शक्ति केन्द्रित नहीं रख सकता। अतः उसने अपने प्रांतों को राज्यपालों के अधीन प्रशासनिक इकाइयों में बांटकर साम्राज्यीय शक्ति को मज़बूत करने का प्रयास किया। इन राज्यपालों को अपने प्रशासनिक क्षेत्र में आर्थिक, प्रशासनिक, न्यायिक और सैन्य शक्तियां प्राप्त थीं और ये प्रत्यक्ष रूप से राजा के प्रति उत्तरदायी थे। लेकिन वे निरंकुश शक्ति का प्रयोग नहीं कर सकते थे क्योंकि सभी मामलों पर राजा की सत्ता तथा निर्णय अंतिम होता था। साथ ही इन्हें ये अधिकार और शक्तियां राजा के नाम पर ही दी गई थीं। इन क्षेत्रों से प्राप्त भेंटों से राज्य के राजस्व में भारी वृद्धि होती थी। असीरियाई सेना की टुकड़ियों की भर्तियां भी इन्हीं क्षेत्रों से की गई थीं जिनका वर्णन विस्तार से नीचे किया जाएगा।

सैन्य टुकड़ियों के लिए मेसोपोटामिया के बड़े भूस्वामियों पर निर्भरता से हट कर टिगलाथपिलेसर तृतीय के शासन काल में स्थाई सेना का निर्माण किया गया। जबरन गरीब किसानों को सेना

THE PEOPLE'S UNIVERSITY

में भर्ती करने की बजाय टिगलाथपिलेसर तृतीय को यह अनुभव हुआ कि उसे अपने विशाल साम्राज्य को नियंत्रण में रखने के लिए एक प्रशिक्षित सेना की आवश्यकता है जो समय पर उसकी सुरक्षा कर सके। राज्यपालों को अपने क्षेत्रों में सैन्य दस्ते भर्ती कर मुख्य सेना के लिए उपलब्ध कराना होता था। इस तरह सेना में विविध प्रकार की विशिष्ट इकाइयां बन गई थीं। उदाहरण के लिए, पैदल सेना अनातोलिया और सीरिया-फिलिस्तीन से आई, जबकि ऊंट सवार अरब से आए। इसने असीरिया की सेना की दक्षता में महत्वपूर्ण रूप से वृद्धि की।

इस स्थाई सेना ने सुनिश्चित किया कि टिगलाथपिलेसर तृतीय उत्तरी ईरान के मेदिया प्रांत में अपने अधिकार क्षेत्र को विस्तृत करने में सफल हो सका। असल में इस विस्तृत सेना के पालन-पोषण और इसे बनाए रखने के लिए लगातार जीत और लूटपाट की आवश्यकता थी जिसे वे इन आक्रमणों के द्वारा प्राप्त करते थे। यह भी ध्यान रखने योग्य है कि चूंकि सेना में अश्वरोही सेना और रथों को सम्मिलित किया जाने लगा तो घोड़ों की बढ़ती आवश्यकता को पूरा करने के लिए उत्तरी ईरान के पर्वतीय चारागाह, जो घोड़ा-पालन में निपुण थे, को साम्राज्य में मिला लिया गया।

इसके अलावा, संघर्ष और विद्रोह को दबाने के लिए किए गए प्रयासों के तहत टिगलाथपिलेसर तृतीय ने एक नीति अपनाई जिसके अनुसार जनसंख्या को विजित क्षेत्रों की ओर स्थानांतरित किया गया। यह विशेषकर उन क्षेत्रों में किया गया जहां कब्ज़े के दौरान बहुत उग्र संघर्ष चला था। उदाहरण के लिए, 744 बी सी ई में ईरान में लगभग 65,000 लोग सैनिक अभियान के अंत में स्थानांतरित किए गए। असीरियाई साम्राज्य के विरूद्ध लोगों में जो नफरत की भावना थी उसकी झलक बाइबल के पुराने संस्करण (Old Testament) में देखने को मिलती है। यह तरीके चाहे जितने भी कठोर थे लेकिन यह दर्शाता है कि इनसे टिगलाथपिलेसर तृतीय और उसके सरगोनिद उत्तराधिकारियों ने इस साम्राज्य को आगे बढ़ाया और इसने अन्य साम्राज्यों को प्रतिमान के रूप में अपनाने के लिए एक रूपरेखा उपलब्ध कराई।

बोध प्रश्न-1

1) असीरियन साम्राज्य ने स्वयं को किस तरह विस्तृत और व्यवस्थित किया?

....

....

....

....

....

2) हम्मुराबी और उसके उत्तराधिकारियों के काल में साम्राज्यों के अस्तित्व की प्रकृति का वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

3) अशुरनीपाल द्वितीय ने किन समस्याओं का सामना किया तथा उनसे निपटने के लिए उसने क्या किया?

....

....

....

....

....

4) साम्राज्य को मज़बूत करने में एक अच्छी सेना किस तरह सहायता करती है?

....

....

....

....

....

12.5 असीरिया का विभाजन और बेबीलोनिया के साथ संघर्ष

जैसा कि पहले विवरण दिया गया है कि टिगलाथपिलेसर तृतीय के शासन काल के दौरान असीरिया ने बेबीलोनिया पर नियंत्रण स्थापित कर लिया था, और इस समय यहाँ कलडीन (Chaldean) जनजाति बस चुकी थी।[4] इन जनजातियों ने सहयोगी इलम[5] कबीलों के साथ मिलकर असीरिया के विरूद्ध संघर्ष किया। बेबीलोनिया ने 692 बी सी ई में असीरिया के विरूद्ध युद्ध छेड़ दिया जिसमें किसी की भी जीत नहीं हुई। 690 बी सी ई में असीरियाई शासक सेन्नाचेरिब (704-681 बी सी ई) ने बेबीलोनिया को पूरी तरह से नष्ट कर दिया। इसका इतना गहरा प्रभाव हुआ कि विनाश के कारण वहां अकाल की स्थिति उत्पन्न हो गई और चीज़ों की कीमतें पच्चहतर गुना तक बढ़ गई थीं। इस संघर्ष का अंत एक साल बाद बेबीलोनिया के आत्मसमर्पण के साथ हुआ। बेबीलोनिया के लोगों को इस युद्ध में बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी, क्योंकि उनके शहर को पूरी तरह से नष्ट कर दिया गया और इसके अपने स्वतंत्र साम्राज्य का अंत हो गया और यह स्थायी प्रांत के रूप में असीरियन साम्राज्य में मिला लिया गया।

सेन्नाचेरिब के पुत्र एसारहद्दोन, जो 681 बी सी ई में सत्ता में आया, ने बेबीलोनिया को फिर से बसाने का आदेश दिया और उसके मौजूदा बचे हुए शेष आवासियों को वापस बुलाया। 672 बी सी ई में अपनी मृत्यु से पहले ही, एसारहद्दोन ने असीरियन साम्राज्य को अपने पुत्रों में विभाजित कर दिया। बड़े पुत्र अशुरबनीपाल को असीरिया मिला, जबकि उसके छोटे पुत्र शमास-शुम-उकीन को राजकुमार के अधिकारों के साथ बेबीलोनिया मिला, लेकिन फिर भी वह स्वतंत्र शासक नहीं था और अधिकतर नियंत्रण उसके बड़े भाई के हाथ में था। 652 बी सी ई में शमास-शुम-उकीन ने मिस्र, सीरिया के कुछ राज्यों और इलम के साथ गुप्त संधि कर असीरिया पर अपनी सैन्य टुकड़ियों के साथ चढ़ाई कर दी। हालांकि, अशुरबनीपाल इलम को संधि में से कूटनीति और पैलेस क्रांति द्वारा हटाने में सफल रहा। बचे हुए सहयोगी बेबीलोनिया को आवश्यक समर्थन देने योग्य नहीं रहे और असीरिया के बेबीलोनिया पर तीन साल तक लगातार हमलों के कारण 648 बी सी ई में बेबीलोनिया की पराजय हो गई। इसके साथ ही इसका शासक शमास-शुम-उकीन भी युद्ध के मैदान में मारा गया। 646 बी सी ई में अशुरबनीपाल इलम को भी हराने में सफल हुआ और उसने इसकी राजधानी सूसा को अपने नियंत्रण में कर लिया।

[4] कलडीन वह जनजाति है जो दसवीं शताब्दी बी सी ई के आरंभ में बेबीलोनिया क्षेत्र में आकर बसी और ये असीरियनों के विरूद्ध स्वतंत्रता की लड़ाई में शामिल हो गए।

[5] कलडीन कबीलों के पारंपरिक मित्र, जिन्होनें यह सुनिश्चित किया कि इन्हें कलडीन और असीरियों के विरूद्ध संघर्ष में हर बार भागीदार बनाया गया।

असीरिया के विरूद्ध बेबीलोनिया का अगला विरोध 626 बी सी ई में कलडीन के शासक, नेबोपोलेसर (658-605 बी सी ई) द्वारा किया गया। वह इलम और बेबीलोनिया की सेना को फिर से संयुक्त कर वापस लाने में सफल रहा। फिर भी बेबीलोनिया को अंततः असीरिया से मुक्त होने में दस साल लगे। मादों (Medes) ने 614 बी सी ई में असीरिया की पुरानी राजधानी असुर पर कब्जा करके बेबीलोनिया की सहायता की। इसके साथ ही नेबोपोलेसर के पुत्र नेबुचाडनेज़्ज़ा का विवाह माद शासक स्याक्ज़ार्स की पुत्री अमिटिस से कर मैत्री-संधि पर मुहर लगाई। 612 बी सी ई में निनेवेह शहर पर मादों और बेबीलोनिया की संयुक्त सेना ने कब्जा कर लिया। हालांकि कुछ असीरियन सैन्य टुकड़ियां इसकी प्रगति रोक पाईं और उन्होंने ऊपरी मेसोपोटामिया पर नियंत्रण बनाए रखा, लेकिन 609 बी सी ई में बेबीलोनिया इन्हें पूरी तरह से हटाने में सफल रहा और अपनी स्थिति को फीनीशिया, सीरिया और फिलिस्तीन में मज़बूत किया। इसी समय, मिस्र का शासक नेको द्वितीय (610-595 बी सी ई) इस प्रदेश में सत्ता की होड़ में था। परिणामस्वरूप पश्चिमी एशिया तीन मुख्य शक्तिशाली ताकतों, मादों (Medes), बेबीलोनिया और मिस्र के नियंत्रण में आ गया। 605 बी सी ई में मिस्र और बेबीलोन, सीरिया और फिलिस्तीन के मध्य घमासान युद्ध हुए। बाद में फीनीशिया के कुछ शहरों ने खुद को विजयी बेबीलोनिया को समर्पित कर दिया। 605 बी सी ई में नेबोपोलेसर की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र नेबुचाडनेज़्ज़ार द्वितीय (605-526 बी सी ई) को सत्ता प्राप्त हुई। 597 बी सी ई में नेबुचाडनेज़्ज़ार ने यहूदियों की राजधानी जेरूसलम पर कब्जा कर लिया और वहां के शासक को विस्थापित कर दिया। बाद में उसने मिस्र के फिरौन एप्राइस के साथ युद्ध किया, जिसने जेरूसलम के शासक को बेबीलोनिया के विरूद्ध विद्रोह करने के लिए भड़काया था। विरोध को दबाने के बाद नेबुचाडनेज़्ज़ार द्वितीय ने जेरूसलम पर फिर से कब्जा कर लिया और वहां के शासक और बहुत से कारीगरों को बेबीलोनिया में निर्वासित कर दिया। नेबुचाडनेज़्ज़ार द्वितीय की 526 बी सी ई में मृत्यु के बाद अगले बारह वर्षों में तीन शासक गद्दी पर बैठे। 556 बी सी ई में यह नेबोनिदस के हाथों में आया जिसने धार्मिक सुधार किये और चंद्र-देवता सिन को महत्व दिया। यह संभव है कि ये धार्मिक विश्वास आरमीनियाई थे और इसे महत्व देने के पीछे उसका उद्देश आरमीनिया जनजातियों को अपने साथ एकीकृत करने की चेष्टा थी। हालांकि बेबीलोनिया के पुरोहित वर्ग ने इसे पसंद नही किया। नेबोनिदस मिस्र की ओर जाने वाले कारवां मार्ग पर कब्जा करने में सफल रहा जो तेईमा के मरूस्थान से होकर गुज़रता था। वह अपने पुत्र बेलशज़्ज़ार को बेबीलोनिया में छोड़ कर स्वयं तेईमा चला गया। बेबीलोनिया की पूर्वी सीमा पर जल्दी ही ईरान के शासक सायरस द्वितीय (लगभग 600-530 बी सी ई) का खतरा मंडराने लगा। तेईमा में दस वर्ष बिताने के बाद नेबोनिदस बेबीलोनिया की सुरक्षा के लिए वापस लौटा। लेकिन अंततः, 539 बी सी ई में बेबीलोनिया ईरान से हार गया और हमेशा के लिए अपनी स्वतंत्रता गवां बैठा।

12.6 समाज और अर्थव्यवस्था

मेसोपोटामिया में क्षेत्र विशेष की राजनैतिक सत्ता के आधार पर सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृति वातावरण में महत्वपूर्ण बदलाव आए।

12.6.1 सामाजिक-आर्थिक विशेषताएं

असीरिया और बेबीलोनिया के साम्राज्यों में सामाजिक-आर्थिक विशेषताओं का विश्लेषण करने के लिए वहां के लोगों और समाज के ढांचे को समझने की आवश्यकता है। ये कारक बताते हैं कि वहां के व्यापार के तरीके कैसे थे? भूमि किस तरह विभाजित थी? तथा वह सामान्यतः प्रत्येक व्यक्ति की आर्थिक और सामाजिक स्थिति को निर्धारित करता था।

मेसोपोटामिया में पहली सहस्राब्दि बी सी ई के दौरान आर्थिक केन्द्र शाही संपत्ति से हटकर

मंदिर और निजी संपत्ति की ओर परिवर्तित हो गया। अर्थव्यवस्था कृषि उत्पादन पर निर्भर थी। उच्च श्रेणी की भूमि मंदिर, शाही परिवार और धनी लोगों के पास थी। छोटे कृषकों की पहुंच विशाल भूखंडों तक नहीं थी इसलिए वे बाज़ार कृषि के लिए अपनी भूमि का प्रयोग करते थे क्योंकि भूमि बहुत मंहगी थी। सिंचाई के द्वारा ही कृषि संभव थी। भूमि की सिचाई नहरों द्वारा की जाती थी। इन नहरों के स्वामी राज्य और मंदिर थे, इनके पानी को प्राप्त करने के लिए शुल्क देना होता था। छोटे भूस्वामी अपनी भूमि अपने परिवार की सहायता से जोतते थे, जबकि बड़े भूस्वामी अपनी भूमि पट्टे पर देते थे।

व्यापार के संदर्भ में बेबीलोनिया फिलिस्तीन, फीनीशिया और मेसोपोटामिया के दक्षिण तथा पूर्व के देशों के मध्य में स्थित था। मिस्र, एलम, सीरिया और अनातोलिया के साथ टिन, तांबा, लोहा, शराब तथा लकड़ी, आदि, वस्तुओं का महत्वपूर्ण व्यापार होता था। पड़ोसी क्षेत्रों में बेबीलोनिया के ऊनी वस्तुओं की विशेष मांग थी। बड़े व्यापारिक परिवारों जैसे ऐजिबी, जिनका मुख्यालय बेबीलोन में था, ने स्थानीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में विभिन्न बैंकिंग तथा वित्तीय गतिविधियों द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बुनकर, लोहार, बढ़ई, आदि शिल्पी अपने उत्पादों को बाज़ार में बेचने के अतिरिक्त एक निश्चित कीमत पर अपने माल की आपूर्ति करने के ठेके लेने में सफल हुए।

उस समय समाज में तीन प्रकार के नागरिक थे। वे जिन्हें पूर्ण अधिकार प्राप्त थे, वे जो निर्भर या अर्ध-स्वतंत्र थे और अंतिम वे जो दास थे। जो नागरिक पूर्ण स्वतंत्र थे वे नगर की सभाओं के सदस्य थे और विवादों के समाधान में सहायता करते थे। ये लोग मंदिर के धार्मिक क्रियाकलापों में भी बढ़-चढ़कर भाग लेते थे और इनका मंदिर के राजस्व में हिस्सा भी निर्धारित था। पुजारियों, राज्य अधिकारियों, बड़ें भूस्वामियों, स्वतंत्र कारीगरों और लेखकों के कानूनी अधिकार सुरक्षित और वंशानुगत थे। उन पर निर्भर आबादी पीढ़ी दर पीढ़ी राज्य, निजी भूस्वामियों और मंदिर की भूमि पर कार्य करती थी। ये व्यक्ति दास नहीं थे और न ही इन्हें बेचा जा सकता था। कृषि का विकास इन स्वतंत्र कृषकों और पट्टे पर भूमि जोतने वालों पर निर्भर था जो भूमि पर कार्य करते थे। यहां तक कि शिल्प उत्पादन भी प्रमुख रूप से इन्हीं स्वतंत्र कृषकों द्वारा किया जाता था। दोनों ही के संदर्भ में यह पाया गया कि ये सभी व्यवसाय आनुवांशिक थे।

स्रोतों की कमी के कारण हमें असीरियाई समाज और अर्थव्यवस्था के बारे में बहुत कम जानकारी है। लेकिन उत्पादन का मुख्य रूप कृषि था, हालांकि छोटे स्तर पर औद्योगिक उत्पादन भी फला-फूला। भूमि मुख्यतः राजकीय भूमि, मंदिर भूमि और अभिजात्य वर्ग के नियंत्रण में थी। असीरियाई विस्तार के कारण उनकी पहुंच लेबनान, अमानूस और पूर्वी अनातोलिया के खनिज स्रोतों तक हो गई। व्यापार भी फला-फूला जिसमें राजकीय तथा निजी व्यापारी दोनों की बराबर सहभागिता थी। विदेशी व्यापार ज़्यादातर विदेशी वस्तुओं जैसे लिनन, कीमती पत्थर, हाथीदांत और रंजक में होता था।

असीरियाई समाज स्वतंत्र व्यक्तियों और दासों में विभाजित था। दास आमतौर पर युद्ध बन्दियों में से बनाए जाते थे और उन्हें बड़े पैमाने पर निर्माण-कार्यों में लगाया जाता था।

12.6.2 सांस्कृतिक विशेषताएं

उस समय मेसोपोटामिया अपनी लेखन-कला के योगदान के कारण जाना जाता था और बाद में पुस्तकालयों के विकास के लिए। प्रधानतः लेखन मिट्टी पर किया जाता था। असीरियन और बेबीलोनिया ने पहली सहस्राब्दि बी सी ई में खाल का प्रयोग और पपायरस (जिससे कागज बनाया जाता था) का आयात आरंभ किया था। इसी समय इन्होंने मोम की पतली परत से ढके हुए तख्तों का प्रयोग किया जिस पर कीलाक्षर (cuneiform) लिपि अंकित की गई।

साम्राज्यों का गठन

मेसोपोटामिया की प्रभावित करने वाली सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि यह थी कि उन्होंने किस तरह इतनी संख्या में पुस्तकालय स्थापित किए, विशेषकर जो निनेवेह में अशरबनीपाल के महल में स्थित है। मेसोपोटामिया में लेखकों ने या तो मिट्टी में लिखी पुस्तकों की प्रतिलिपि बनाई थी या फिर ये पुस्तकें इन्होंने स्वयं एकत्र की थीं। पुस्तकालय की 30,000 पट्टालिकाओं (tablets) में दरबार वृतांत, महत्वपूर्ण घटनाओं के विवरण, साहित्यक और वैज्ञानिक कार्यों के विवरण हैं।

महत्वपूर्ण रूप से, अशरबनीपाल का पुस्तकालय ऐसा पहला पुस्तकालय था जो विशेष क्रम में संतुलित रूप से व्यवस्थित था। लम्बे अवतरणों ने अधिक जगह घेरी थी क्योंकि कुछ अवतरण तो चालीस से सौ पट्टिकाओं जितने लम्बे थे। सूचीपत्र बनाने में ध्यान दिया गया था और यह सुनिश्चित किया जाता था कि ये आसानी से प्राप्त हो जाएं और इन्हें आवश्यकतानुसार बदला जा सके। हर पट्टिका पर 'पृष्ठ संख्या' अंकित थी और पुस्तक का शीर्षक पट्टिका के आरंभ के कुछ शब्दों से निर्धारित किया जा सकता था। साहित्यक लेखों में कुछ ऐसा लिखा होता था जो कि पुस्तक के पहले पृष्ठ सदृश्य हो, जिसमें पुस्तक के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया होता था। पुस्तक को ढूंढने के लिए उनमें धागे के साथ एक शीर्षक लगा होता था जिसमें पुस्तक का नाम, वह किस श्रृंखला से सम्बंधित है और उसमें प्रयोग हुई कुल पट्टिकाओं की संख्या लिखी होती थी। यह पट्टिकाएं वास्तव में एक प्रकार का सूचीपत्र (catalogue) थीं।

सैन्य टुकड़ियों द्वारा विदेशी धरती की ओर की गई यात्राओं का इतिहास, विशेषकर कलात्मक शैली में लिखे लयबद्ध गद्य उल्लेखनीय हैं। असीरियन रचनाओं में सबसे महत्वपूर्ण है राजा अहिक़र के एक बुद्धिमान लेखक और सलाहकार की कहानी जो कि यूनानी, आरमेनियन और सीरियन तथा अन्य भाषाओं में अनुवादित की गई। इस रचना का सबसे विस्तृत रूप आरमीनियाई संस्करण है।

बेबीलोनिया का सबसे महत्वपूर्ण योगदान हम्मुराबी की 'न्याय संहिता' है। हम्मुराबी ने इससे कई प्रगतिशील सुधार किए जो अधिक मानवीय थे। उसने पुराने 'एक आँख के बदले आँख' जैसे विचार हटा दिए। उसने पुरानी संहिताओं 'उरुकागिना', 'उर-नम्मू', तथा 'लिपित-इशतर' से विचार ग्रहण किए। साथ ही उसने प्रचलित 'धन द्वारा क्षति पूर्ति' की व्यवस्था में भी परिवर्तन किया।

बेबीलोनिया वासियों की खगोलशास्त्र में अत्यधिक रुचि थी और उन्होंने सूरज, चन्द्रमा, विभिन्न नक्षत्रों और ग्रहों के प्रयोगसिद्ध आंकड़ों और जानकारी को एकत्रित किया था। इन खगोलविद्ों ने चन्द्रमा से सम्बंधित खगोलीय तत्वों के संचरण को देखा और उन खगोलीय तत्वों के संचरण, जो नग्न आंखों से देखे जा सकते थे, को मानचित्रों पर चिन्हित किया। इन अनुभवों ने समय के साथ बेबीलोनिया में गणितीय खगोलशास्त्र का विकास किया। पांचवी शताब्दी बी सी ई के महान् खगोलविद् नेबुरियानस और किदिन्नु ने इस क्षेत्र में रचनात्मक योगदान दिया। इन्होंने चन्द्रमा के घटने-बढ़ने की दशा और सौर वर्ष की लम्बाई के सम्बंध में ज्ञान विकसित किया।

आठवीं और सातवी शताब्दियों में कला के क्षेत्र में मेसोपोटामिया ने असीरियन नक्काशी वाली मूर्तिकला की रचना के क्षेत्रों में विशिष्ट रूप से प्रगति की। इनमें शहरों पर कब्जा, शत्रु की भूमि पर चढ़ाई और शिकार के दृश्य अंकित हैं। कलाकार स्थिर चित्रों, लोगों, और जानवरों की रचना से हटकर प्राकृतिक दृश्यों के चित्र बनाने लगे थे। असीरियन निपुण धातु-कार्मिक थे। उन्होंने कांसे की अलंकृत उकेरी हुई पट्टिकाएं भी बनाई थीं। मेसोपोटामिया अपने मंदिर **ज़िगरैटों (ziggurat)** के लिए भी बहुत प्रसिद्ध था। बाइबल में बेबल के बुर्ज के नाम से जाना जाने वाले ज़िगरैट के संदर्भ में कहा जाता है कि यह सात मंज़िला ज़िगरैट नेबूकदनेज़्ज़ा द्वारा

बनाया गया था। ऐसा माना जाता है कि बेबीलोनिया का प्रसिद्ध हैंगिंग गार्डन भी इसी के द्वारा बनवाया गया था जो कि प्राचीन विश्व के अजूबों में से एक माना जाता है।

चित्र 12.1: बेबल टॉवर का चित्र
साभारः पीटर ब्रुगेल द एल्डर, 1563
स्रोतःhttps://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/5/50/Pieter_Bruegel_the_Elder_-_The_Tower_of_Babel_%28Vienna%29_-_Google_Art_Project.jpg

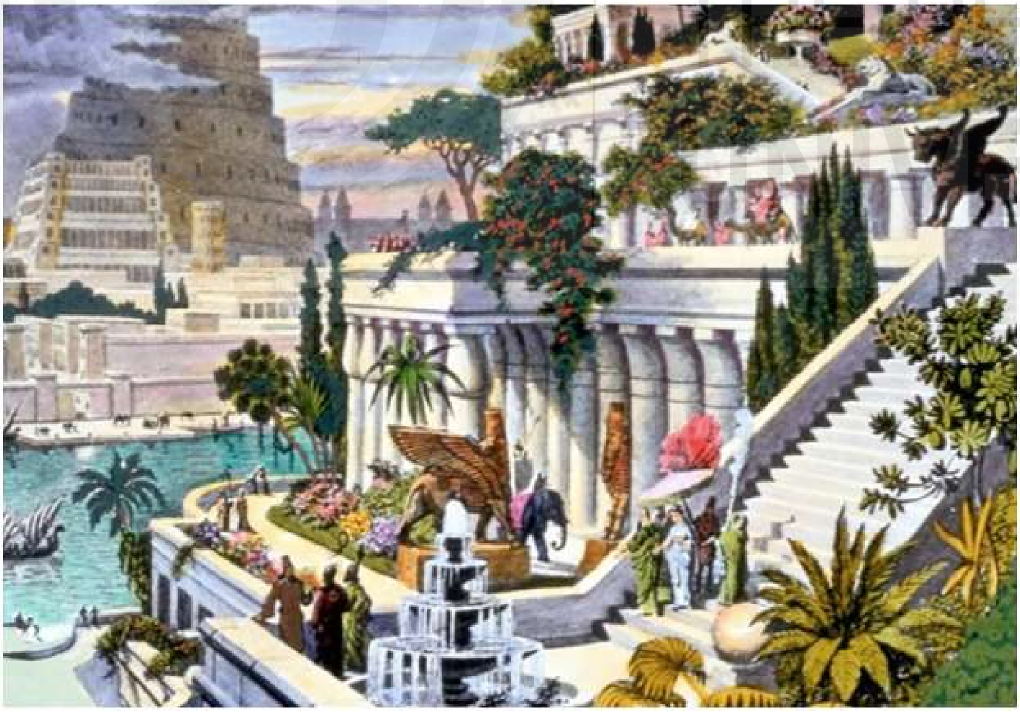

चित्र 12.2: बेबीलोनिया के हैंगिंग गार्डन का चित्र
साभारः मार्टिन वेन हीमर्स्कर्क (1498-1574)
स्रोतः https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/a/ae/Hanging_Gardens_of_Babylon.jpg

शिल्प उत्पादन के क्षेत्र में फिनिशिया के शहर कांच के काम के लिए जाने जाते थे जो कि निर्यात करने के लिए बनाया जाता था। इसके साथ ही यहां का जामनी रंग में रंगी हुई ऊन

और लिनन का कपड़ा बहुत प्रसिद्ध था। पहली सहस्राब्दि बी सी ई के मध्य तक दक्षिणी अरब मसालों और रत्नों के व्यापार में भी शामिल हो गया जो कि भारत और सोमाली तट से आते थे।

बोध प्रश्न-2

1) असीरियन साम्राज्य के पतन के क्या कारण थे?

....

....

....

....

....

2) अर्थव्यवस्था में राजस्व का मुख्य स्रोत क्या था? अर्थव्यवस्था के प्राथमिक सहभागी कौन थे?

....

....

....

....

....

3) असीरियन ग्रंथों तथा उनके रखरखाव का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

....

....

....

....

....

4) व्यापार की मुख्य वस्तुएं क्या थीं? वे सभी कहां पहुंचाई जाती थीं?

....

....

....

....

12.7 सारांश

इस इकाई में हमने साम्राज्यों के गठन पर विचार किया है – कैसे उनका विकास हुआ, कैसे वह बने रहे और फिर कैसे उनका पतन हुआ। हर एक साम्राज्य की कहानी पृथक है। यहां हमने जनजातियों के आवागमन से क्षेत्रीय विस्तार होने की प्रकिया को समझा। एक बार भू-क्षेत्र पर कब्ज़ा कर लेने के बाद उसे नियंत्रण में बनाए रखने के लिए स्थानीय आबादी से सेना के रखरखाव के लिए शुल्क एकत्रित किया जाता था। सेना की प्रकृति के अध्ययन से

साम्राज्य की स्थिरता का ज्ञान होता है। एक स्थिर साम्राज्य के स्थायित्व के लिए स्थायी सेना के रखरखाव करने की आवश्यकता थी क्योंकि इससे वह अन्य क्षेत्रों पर विजय प्राप्त करके आर्थिक संसाधनों को व्यापार और अन्य आर्थिक गतिविधियों को बढ़ाने में सफल हो सकता था। एक स्थिर साम्राज्य के दायरे में रहकर ही शासक कला, वास्तुकला के विकास, और व्यापार और अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों के प्रति महत्वपूर्ण समय और ऊर्जा का निवेश कर सकते थे।

12.8 शब्दावली

पपायरस	:	लंबे पौधे जैसी घास जिससे एक प्रकार का कागज़ बनाया जाता है जिसका इस्तेमाल ख़ासतौर पर प्राचीन मिस्र के लोग किया करते थे।
सैमेटिक	:	अरब और मध्य पूर्व के यहूदियों से संबंधित
ज़िगरैट	:	मेसोपोटामिया के मुख्य शहरों में पाये जाने वाले पिरामिडीय आकार के सीढ़ीदार मंदिर टावर

12.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) भाग 12.4 देखें

2) उत्तर में हम्मुरब्बी द्वारा साम्राज्य-विस्तार और समेकन पर चर्चा सम्मिलित होनी चाहिए। भाग 12.3 देखें

3) उप-भाग 12.4.1 देखें

4) उप-भाग 12.4.2 देखें

बोध प्रश्न-2

1) आन्तरिक विवाद, ईरान (Persia) के उदय पर चर्चा कीजिये। भाग 12.5 देखें

2) कृषि, छोटे भूमि धारकों पर चर्चा कीजिये। उप-भाग 12.6.1 देखें

3) उप-भाग 12.6.2 देखें

4) उत्तर में कांच, धातुओं आदि पर चर्चा सम्मिलित होनी चाहिए। उप-भाग 12.6.1 देखें

12.10 संदर्भ ग्रंथ

हरमन, जोआचिम एवं एरिक ज़ुरचर (संपा.). 1996. *हिस्टी ऑफ ह्युमैनिटी: साइन्टिफ़िक ऐंड कलचरल डिवेलॅप्मेन्ट, फ़्रॉम द सेवन्थ सेन्चुरी टू द सेवन्थ ए. डी.* भाग 3. पाठ 7. न्यूयार्क: यूनेस्को. रूटलेज.

क्रिवाक्ज़ेक, पॉल. 2014. *बेबीलोनः मेसोपोटामिया एंड द बर्थ ऑफ सिविलाइजेशन.* ग्रेट ब्रिटेनः अटलांटिक बुक्स.

मैकनील, डोनाल्ड जी. 1967. 'द कोड ऑफ हम्मुरब्बी', *अमेरिकन बार एसोसिऐशन जर्नल.* 53 (5): 444-446.

पिन्चेस, थियोफिलस जी. 1917. 'द लेंग्वेज ऑफ द कस्साइट्स". *द जर्नल ऑफ द रॉयल एशिआटिक सोसाइटी ऑफ ग्रेट ब्रिटेन एंड आयरलैंड.* 101-114.

राडनर, केरन. 2015. *एन्शैन्ट असीरिया: ए वेरी शॉर्ट इन्ट्रोडक्शन.* ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

रेगोज़िन, जेनाएड ऐलेक्सहवना. 1894. *द स्टोरी ऑफ असीरिया: फ्रॉम द राईज़ ऑफ द इम्पायर टू द फ़ॉल ऑफ निनेवेह.* न्यूयार्क: टी. फिशर अनविन.

केम्ब्रिज इंगलिश डिक्शनरी: http://dictionary.cambridge.org (http://www.britannica.com)

पी डी एफ:

'द रिलिजन ऑफ द कस्साइटस'. 1885. *द यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस जर्नल.* भाग-1 (3).

https://www.jstor.org/stable/pdf/527374.pdf?refreqid=search

12.11 शैक्षणिक वीडियो

असीरियन एम्पायर
https://www.youtube.com/watch?v=UZhEcoBPO1k

द पावर ऑफ बेबीलोन
https://www.youtube.com/watch?v=HpHIw-NPGJI&t=628s

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 13 साम्राज्यों का गठन: सासानिद*

इकाई की रूपरेखा

13.1 उद्देश्य

13.2 प्रस्तावना

13.3 साम्राज्य का विकास और सुदृढ़ीकरण

13.3.1 शापुर प्रथम

13.3.2 शापुर प्रथम के उत्तराधिकारी

13.4 बाइज़ेंटाइन और सासानियन सम्बंध

13.5 प्रशासनिक संस्थाएं

13.5.1 कानून व्यवस्था

13.5.2 सेना

13.5.3 रक्षा प्रणाली

13.5.4 अस्त्र-शस्त्र

13.6 अर्थव्यवस्था

13.7 सामाजिक संगठन

13.8 संस्कृति

13.8.1 वास्तुकला

13.8.2 कला और मूर्तिकला

13.8.3 साहित्य

13.9 धर्म

13.10 सारांश

13.11 शब्दावली

13.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

13.13 संदर्भ ग्रंथ

13.14 शैक्षणिक वीडियो

13.1 उद्देश्य

पिछली इकाई में आपको साम्राज्य की अवधारणा, उसकी वृद्धि और पतन से परिचित कराया गया है। इस इकाई में हम सासानियन साम्राज्य, उसकी उत्पत्ति और विकास के बारे में पढ़ेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप:

- सासानियन साम्राज्य के विस्तार और विकास को पहचान सकेंगे,
- धर्म और राज्य के बीच संबंध को समझ सकेंगे,

* डॉ. जीना जैकब, सेंटर फॉर हिस्टॉरिकल स्टडीज़, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

- कला और वास्तुकला का साम्राज्य के विकास में योगदान को समझ सकेंगे, और
- साम्राज्य के सैन्य अभियानों के तरीके और उनके प्रभाव को समझ सकेंगे।

13.2 प्रस्तावना

तीसरी शताब्दी सी ई से सातवीं शताब्दी सी ई के दौरान सासानियन साम्राज्य वर्तमान ईरान क्षेत्र का महत्वपूर्ण साम्राज्य था। इस साम्राज्य का मूल महत्व इस तथ्य में है कि कला, कृषि और शहरीकरण कुछ ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें इस अवधि के दौरान ईरान में विशिष्ट विकास हुआ। पूर्व-इस्लामिक ईरानी साम्राज्यों में इसे 'स्वर्ण युग' के तौर पर पहचाना जाता है।

सासानिद साम्राज्य के इतिहास के बारे में अधिक जानकारी नहीं मिलती और इसके आरंभिक इतिहास की पुनर्रचना करना बहुत मुश्किल था। ऐसा माना जाता है कि इस साम्राज्य का उदय पर्सिस प्रांत के एक छोटे शासक के पार्थियन 'राज्य' और ऐसे ही कुछ अन्य पड़ोसी शासकों के विरूद्ध एक सफल संघर्ष के साथ हुआ। स्थानीय शासकों द्वारा प्रमाणित सिक्कों पर एकेमिनियाई शासकों डेरियस (550-487 बी सी ई) और आरतेज़ेरेक्सेस (465-424 बी सी ई) जैसे शासकों के नामों से ऐसा माना जाता है कि साम्राज्य में कुछ अर्थों में एकेमिनियाई परंपराओं की निरंतरता परिलक्षित होती है।

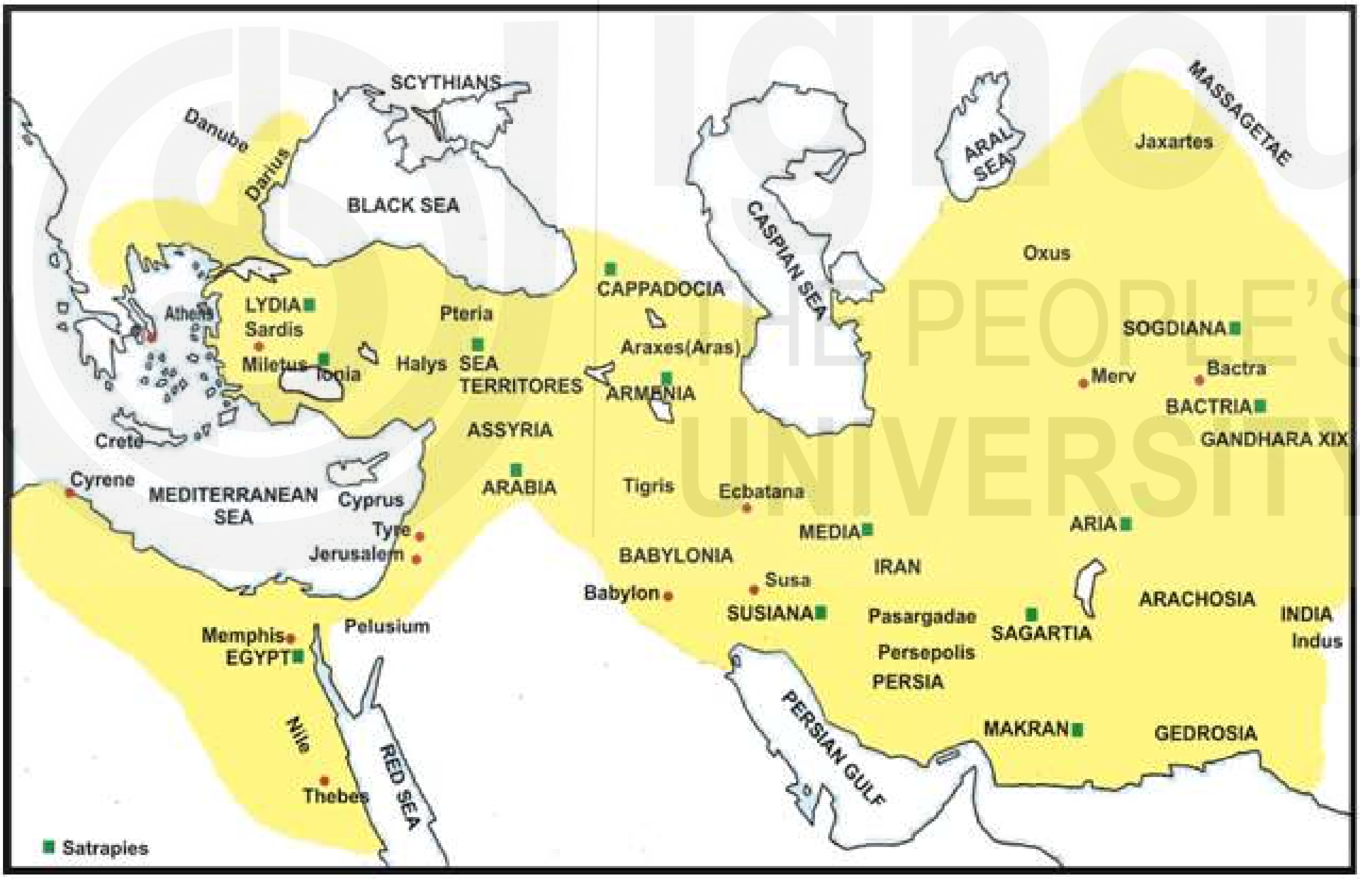

मानचित्र 13.1: ईरानी साम्राज्य का डेरियस-I के शासनकाल तक विस्तार
स्रोत: एम. एच. आई-01: प्राचीन और मध्यकालीन समाज, इग्नू अध्ययन सामग्री, 1990, खंड 3, इकाई 11, मानचित्र 1, पृ. 22

साम्राज्य के शासन काल को तीन चरणों में विभाजित किया था। तीसरी और चौथी शताब्दी को वह अवधि माना गया है जिसमें साम्राज्य स्थापित हुआ था और उस समय शासकों की महत्वाकांक्षाएं एक विस्तृत और विशाल साम्राज्य की स्थापना की थी। दूसरा चरण, पांचवी और

छठी शताब्दी के आरंभ में हेफ्थलियों[1] द्वारा सीमा पर आक्रमणों के कारण साम्राज्य के पतन की अवधि माना जाता है। हालांकि शेष छठी और सातवीं शताब्दी में खुसरो (531-579 सी ई) के अधीन पुनरुत्थान देखने को मिलता है। खुसरो के शासन काल में साम्राज्य ने महान्तम ऊंचाईयों को छुआ जिसमें ऐश्वर्य और वैभव को बल मिला और जिसने अंततः शक्ति की प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा दिया, जिसके कारण शासक लगातार बदलते रहे। इस अस्थिरता ने अरब सेना को इस क्षेत्र में घुसपैठ करने के लिए अवसर प्रदान किया।

एक दिलचस्प तथ्य पर ध्यान देना आवश्यक है कि सासानिद साम्राज्य में हर शासक के शासन काल के आरंभ से उनके शासन काल की गणना आरंभ होती थी। इसलिए, विशेषकर 'सासानिद युग' को समझना बहुत कठिन है। जबकि 205-206 सी ई में पाबाग के विद्रोह को सासानिद युग के आरंभ की तरह देखा जाता है, हमज़ा लिखते हैं कि पार्थियनों के अर्दशीर प्रथम (शासनकाल 224-242 सी ई) से हारने के बाद नए युग का 224 सी ई में उदय हुआ।

सासानियों के बारे में जानकारी ईरानी और गैर-ईरानी दोनों ही स्रोतों से प्राप्त होती है। फरात नदी के किनारे पुरातात्विक स्थलों से प्राप्त अवशेषों ने सासानियों की सैन्य व्यवस्था की पुनर्रचना करने में सहायता की लेकिन इस पर ध्यान देना चाहिए कि वहां कुछ क्षेत्र ऐसे हैं जहां अब तक अधिक खोजे नहीं की गई हैं जैसे अंथा और थिलुथा। फ्रांसीसी टीम ने बेक्ट्रा जैसे क्षेत्रों की खोज की जिसने किलेबंदी से सम्बंधित जानकारी प्रदान करने में सहायता की। सिक्के, जिनके बारे में इस इकाई में आगे विस्तार से अध्ययन किया जाएगा, सासानिद साम्राज्य के कालानुक्रम को समझने में काफी सहायता प्रदान करते हैं। शिलालेख और मुहरें इस अवधि के अध्ययन को युक्तिसंगत बनाने में सहायता करती हैं। शिलालेख साम्राज्य के संस्थापक अर्दशीर प्रथम के काल के आरंभ के समय से मिलते हैं। ये शिलालेख न सिर्फ सासानियों के राजनैतिक विचारों की झलक देते हैं बल्कि इसके साथ-साथ ये उनके धार्मिक जीवन के बारे में भी बतलाते हैं। दुर्भाग्यवश, सासानिद काल से सम्बंधित सभी लिखित दस्तावेज उपलब्ध नहीं हैं, जैसा कि हम **पपायरी** और पार्चमेंट[2] पर लिखे दस्तावेज़ों के सम्बंध में देखते हैं कि वे पढ़े नहीं जा सकते और इसीलिए व्याख्या के लिए उपलब्ध नहीं हैं।

यूनानी और लैटिन ग्रंथ, जैसे कि डिओ कैसियस (एक रोमन राजनीतिज्ञ और यूनानी मूल का इतिहासकार) सासानियों के उदय का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत करते हैं। प्रोपकोपियस जैसे इतिहास लेखक, जो रोमन जनरल बेलिसेरीयस (500-565 सी ई) के साथ उसके सासानियों के विरूद्ध अभियानों में गया था, ने भी सासानियों के इतिहास के कुछ काल के बारे में वृतांत लिखा है। बाइज़ेटाइन स्रोत अधिक विश्वसनीय नहीं हैं। वहीं दूसरी ओर यद्यपि आरमेनियाई स्रोत प्रचुर मात्रा में हैं फिर भी इनका प्रयोग विवेकपूर्ण ढंग से करना चाहिए क्योंकि ये भी कभी-कभी अविश्वसनीय होते हैं। सिरियाई ग्रंथ 'क्रोनीकल ऑफ अरबेला' आरंभिक सासानिद काल के अध्ययन के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है। यहां तक कि चीनी यात्रियों ने भी सासानियों से पारस्परिक आदान-प्रदान के दस्तावेज छोड़े हैं। फिरदौसी (लगभग 977 सी ई) द्वारा फारसी भाषा में लिखित *शाहनामा* में सासानिद काल का प्रमाणिक इतिहास है। इब्न अल-बल्खी द्वारा लिखित *फार्स-नामा* (बारहवीं शताब्दी के दौरान लिखी गई) को सबसे महत्वपूर्ण प्राथमिक स्रोत माना जाता है जो कि पर्याप्त प्रमाणिक जानकारी प्रदान करता है।

---

[1] हेफ्थली मध्य एशिया के सबसे शक्तिशाली घुमंतू समूह थे, जैसा कि इस पाठ्यक्रम की **इकाई 11** में इस पर चर्चा की गई है। बाद में तुर्किस्तान पर अधिकार ईरानियों, हूणों और हेफ्थलियों के मध्य विवाद का कारण बना।

[2] इन लिखित दस्तावेजों की अधिक जानकारी के लिए: ज़ैनी, अर्श (2018)। 'मिडिल पर्शियन पपायरी, ओस्ट्रेका एंड पार्चमेंट्सः एन इन्ट्रोडक्शन', *सासानिका पपायरोलोजिकल स्ट्डीस.* नं.1. जार्डन सेंटर फॉर परशियन स्ट्डीस. यूनिवर्सिटी ऑफ केलिफोर्निया, इरविन (https://www.sasanika.org/wp-content/uploads/Sasanika_PS01_Zeini.pdf)

13.3 साम्राज्य का विकास और सुदृढ़ीकरण

माना जाता है कि सासानियन साम्राज्य का संस्थापक सासान (आरंभिक तीसरी शताब्दी सी ई) था जिसके बारे में हमारे पास अधिक जानकारी नहीं है। अर्दशीर प्रथम, जिसे सासान का पौत्र माना जाता है, सासानियन साम्राज्य का प्रथम सबसे महत्वपूर्ण शासक माना जाता है। हालांकि, इस पौराणिक कथा के अनेक रूपांतरण हैं। अरब इतिहासकार तबरी के अनुसार सासान, अर्दशीर का दादा था और पाबाग पिता। हालांकि, शापुर प्रथम (लगभग 240-270 सी ई) के शासन काल के दौरान प्राप्त यूनानी, मध्य फारसी और पार्थियन त्रिभाषीय शिलालेख में सासान पाबाग के पिता के रूप में वर्णित नहीं किया गया है। जबकि सासान को केवल एक अधिपति के रूप में उल्लेखित किया गया है और पाबाग को राजा कहा गया है। अर्दशीर को 'ईरान के राजाओं का राजा' और उसके पुत्र शापुर प्रथम का वर्णन 'ईरान और गैर-ईरान के राजाओं का राजा' के रूप में किया गया है। विद्वानों का मत है कि बहुत हद तक संभव है कि सासान अर्दशीर का दूर का पूर्वज रहा हो जिसके नाम पर साम्राज्य का नामकरण है। इसे इस तरह भी समझा जा सकता है कि सासान अर्दशीर का पिता रहा हो जिसे पाबाग ने सासान की मृत्यु के बाद गोद लिया हो, जैसा कि ज़रतुश्तों में यह आम प्रथा थी।

पाबाग के शासन काल का समय निश्चित नहीं हैं। 58वें वर्ष का उल्लेख मिलता है परन्तु यह निश्चित नहीं है कि यह समयावधि किस युग से सम्बंधित है। यही निश्चित किया जा सकता है कि पाबाग वो शासक था जिसने पार्थियन शासन काल में फारस (Fars) के काफी क्षेत्रों को संगठित किया। इसने शायद इस्तखर के शासक का तख्ता पलट दिया था या फिर पार्थियन प्रदेश से अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी थी। पाबाग की मृत्यु की तारीख की जानकारी नहीं है और ऐसा माना जाता है कि उसे एक बार फिर से पार्थियन शासन के अधीन ले आया गया था। ऐसा प्रतीत होता है कि पाबाग का शासन फारस (Fars) प्रदेश तक ही सीमित रहा और जितना भी विस्तार हुआ संभवतः अर्दशीर प्रथम द्वारा किया गया था।

बुक ऑफ द डीड्स ऑफ अर्दशीर, जो 224-651 सी ई के दौरान किसी समय में लिखी गई थी, वह शासकों के बारे में ऐतिहासिक कहानियां, गाथाओं के रूप में उपलब्ध कराती है। इसका ऐतिहासिक महत्व काफी माना जाता है क्योंकि इसमें कई भौगोलिक क्षेत्रों का उल्लेख है। हालांकि, यह स्पष्ट नहीं है कि अर्दशीर मूल रूप से कहां से था। 224 में पिता पाबाग और भाई शापुर, अरसासिद शासन (आरमेनिया राज्य पर 54-428 सी ई तक) के विरूद्ध विद्रोह कर रहे थे। उनकी मृत्यु के बाद अर्दशीर प्रथम ईरान, खुर्ज़िस्तान और केरमान को जीतने में सफल रहा। उसने पार्थियनों पर भी निर्णायक जीत हासिल की। यह जीत फिरूज़ाबाद के शिलालेख पर उत्कीर्ण की गई है। यह वह समय था जब शापुर प्रथम ने 'राजाओं का राजा' (*शहंशाह*) की उपाधि धारण की थी, फिर भी हात्रा (241 सी ई) के युद्ध में पराजय प्राप्त की और उसे आरमेनिया से बाहर कर दिया गया जहां अरसासिद राज्य का एक सामान्तर वंश शासन कर रहा था। वह पूर्वी ईरान में मर्व तक पहुंच गया था। दक्षिण-पश्चिम में सासानियन सेनाएं बहरीन तक और उत्तर-पश्चिम में पार्थिया और रोम की पुरानी सीमारेखा तक पहुंच गई थीं। विद्वानों का मानना है कि उसके साम्राज्य की सीमाओं का इसके आगे सही तरीके से आंकलन करना संभव नहीं है। अर्दशीर प्रथम को इस बात का अनुभव हुआ कि उसे प्रदेश के प्रशासनिक ढांचे में बदलाव करने की आवश्कता है। इसकी आवश्यकता रोमन साम्राज्य के ईरान की सीमाओं तक पहुंचने के कारण पड़ी, जो प्रदेश की सीमाओं के पास के कमज़ोर और छोटे राज्यों को बीच में प्रतिरोधक के रूप में उपयोग करके उनका लाभ उठा रहा था। 239 सी ई में सासानियों द्वारा हात्रा पर कब्ज़ा करना रोमन साम्राज्य के लिए एक बहुत बड़ा धक्का था। रोमन साम्राज्य ने 239 सी ई में दूरा को और इसी तरह कर्रहाए और निसीबिस को 235 सी ई के आरंभ में सासानियों के हाथों गंवा दिया।

मानचित्र 13.2 : सासानी साम्राज्य की सीमारेखा और उसका विस्तार
साभारः कीबे 101
स्रोतः विकीमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Sassanian_Empire_621_A.D.jpg)

13.3.1 शापुर प्रथम

शापुर प्रथम अपने पिता की मृत्यु के बाद 240/241 सी ई में सत्ता में आया, जिसकी तारीख की सही जानकारी प्राप्त नहीं है। शापुर प्रथम के शासन काल के बारे में जो जानकारी उपलब्ध है वो परसेपोलिस के पास *ज़रतुश्त का काबा* के नाम से जाने, जाने वाले स्मारक के आधार पर अंकित त्रिभाषी शिलालेख (मध्य ईरानी, पार्थियन और यूनानी) से प्राप्त होती है। इससे हम उसके सैनिक अभियानों, साम्राज्य के संगठनों और दरबार के साथ-साथ विभिन्न प्रांतों, जो उनके साम्राज्य का हिस्सा थे, के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं। सामरिक दृष्टि से शापुर प्रथम रोमन शासक गॉर्डियन तृतीय (238-244 सी ई) को पराजित करने में सफल रहा। उसका उत्तराधिकारी फिलिप द अरब (244-249 सी ई) शापुर प्रथम को भारी शुल्क देकर अपने पद को बचाए रखने में सफल रहा। शापुर ने सीरिया पर आक्रमण किया और बहुत बड़ी संख्या में उसके शहरों पर नियंत्रण कर लिया। शापुर ने वेलेरियन (रोमन साम्राट 253-260 सी ई) को 258 सी ई में पराजित किया और लगभग उसके 40 शहरों पर नियंत्रण करने में सफल रहा जिनमें से एक प्रमुख एन्टीओक भी है।

साम्राज्य की पूर्वी सीमा विवादित थी। हेरात, तूरान और सिंध जैसे प्रदेश इसमें सम्मिलित थे, परन्तु इनकी सही सीमा निर्धारित करना बहुत कठिन है। पश्चिम कुषाणों के प्रदेश शापुर प्रथम द्वारा जीते गए और उन्हें सासानियन राज परिवार के नियंत्रण में दे दिया गया। आर्मेनिया और जॉर्जिया जैसे क्षेत्र भी इसके नियंत्रण में थे। सिक्कों पर लिखे अभिलेखों से हमें साक्ष्य प्राप्त होते हैं कि इसने 'ईरान और गैर-ईरान के राजाओं का राजा' की उपाधि धारण की थी। यह दर्शाता है कि इसने प्राचीन ईरान की सीमाओं के पार फैले विस्तृत क्षेत्र तक नियंत्रण कर लिया था। शापुर प्रथम के समय में ही सासानिद साम्राज्य का नियंत्रण सर्वाधिक क्षेत्र पर हुआ। हाल ही के अध्ययन 'ईरान' के सम्बंध में बताते हैं कि 'ईरान' की संकल्पना जातीयता और भाषा तक ही सीमित नहीं रह गई थी बल्कि यह धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान का भी द्योतक था।

13.3.2 शापुर प्रथम के उत्तराधिकारी

शापुर प्रथम के पुत्र नार्सेह (292-302 सी ई) के शासन काल के दौरान 'गैर-ईरानी' क्षेत्रों पर नियंत्रण ढीला पड़ गया। इससे क्षेत्रीय गवर्नरों को अपनी मनमर्जी करने की स्वतंत्रता मिल गई। रोमन साम्राज्य ने पहले से ही तिगरेन्स द ग्रेट (95-55 बी सी ई) को पश्चिमी आर्मेनिया का नियंत्रण सौंपा हुआ था। नार्सेह आर्मेनिया के पूर्वी क्षेत्र का शासक था। नार्सेह के पूर्वज, बहराम प्रथम (271-274 सी ई) और बहराम द्वितीय (274-292/93 सी ई), दोनों ही ने साम्राज्य के पूर्वी क्षेत्र के कई प्रदेशों पर नियंत्रण खो दिया था।

शापुर द्वितीय (309-379 सी ई) अन्य दूसरा सबसे शक्तिशाली सासानिद शासक था। अपने 70 साल के लम्बे शासन काल में इसने चि़योनितों, संभवतः ईरानी मूल की एक जनजाति जो विशेषकर बैक्ट्रिया में प्रतिष्ठित थी, के विरूद्ध पूर्वी सीमाओं को सुरक्षित रखने के लिए विभिन्न अभियान चलाए। इसने ईराक में *लाइम्स* (सुरक्षा सीमा रेखा) बनाने का कार्य शुरू किया ताकि अरब बेदोइन (बद्दू; मध्य पूर्व रेगिस्तान के अरबी बोलने वाले घुमंतू लोग) को अपने प्रदेश में आने से रोक सकें। ऐसा माना जाता है, उसने रोमन साम्राज्य द्वारा सीरिया के रेगिस्तान में सुरक्षा सीमा निर्माण से प्रेरित होकर ईराक में सीमा का निर्माण किया था। सिक्कों पर प्राप्त लेखों से पता चलता है कि शापुर द्वितीय मर्व शहर में रहता था। अपने शासन काल के दौरान शापुर द्वितीय जॉर्जिया के सिंहासन पर अपनी पसंद के शासक को बिठाने में सफल रहा। इस समय रोम ने आर्मेनिया पर अपना संरक्षण खो दिया था। हालांकि, शापुर द्वितीय ने अपने शासनकाल के अंत समय में आर्मेनिया को विभाजित कर दिया। जिसका एक छोटा हिस्सा रोम को मिला। शापुर द्वितीय के शासनकाल का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि उसके समय में केन्द्रीय सत्ता संगठित हुई और अग्नि मंदिर के आस-पास धार्मिक सत्ता के पदानुक्रम का निर्माण हुआ।

बहराम पंचम (420-438 सी ई) को अपनी वीरता और शिकार की योग्यताओं के लिए आदर्श शासक माना जाता है। हालांकि, उसे प्रशासन अधिक पसंद नहीं था जिसे उसने अपने मंत्रियों पर छोड़ दिया था। इसके शासन के दौरान पूर्वी सीमा से चियोनितों की ओर से बहुत मुश्किलें पैदा हो रही थीं और वह उन पर विजेता बन कर उभरा।

पीरोज़ (459-484 सी ई) अल्बानिया, जॉर्जिया और आर्मीनिया जैसे प्रदेशों के साथ शांति स्थापित करने का प्रयास कर रहा था जो कि इस समय तक अधिकतर ईसाई धर्म अपना चुके थे। 469 सी ई में हेफ्थेलाइट्स द्वारा उसे पराजित कर क़ैद कर लिया गया और बाद में उसे 484 सी ई में मार डाला गया। उसका उत्तराधिकारी वलाख्श हेफ्थलाइट्स को बहुत भारी शुल्क देता था जिसने ईरानियों को बहुत शर्मसार किया। ईरानियों ने पहले ही पीरोज़ के शासनकाल में सात वर्ष के लम्बे अकाल में बहुत पीड़ा सहन की थी।

पीरोज़ के पुत्र कवाद प्रथम (488-531 सी ई) के शासनकाल के दौरान एक बहुत दिलचस्प घटना घटी। मज़दक के नेतृत्व में एक आंदोलन खड़ा हुआ जिसकी तुलना साम्यवाद से की गई है। मज़दक, जिसके विचार मैनीकेइज़्म (Manichaeism; सासानी साम्राज्य के दौरान मानी नामक ईरानी पैगम्बर द्वारा चलाया गया एक बहुत बड़ा धार्मिक आंदोलन) से प्रभावित थे। कवाद ने इस विचार का समर्थन किया कि धन-सम्पत्ति और महिलाओं का समान रूप से बटवारा होना चाहिए जिससे कुलीनों की शक्ति को अत्यधिक कम किया जा सके। कवाद के इन प्रयासों के कारण कुलीन और धार्मिक प्रमुखों ने उसे अपदस्थ कर जेल में डाल दिया। कवाद वहां से भागने में सफल हुआ। वह भागकर हेफ्थेलाइट्स के पास चला गया जिन्होंने कवाद की पुनःसत्ता प्राप्त करने में सहायता की। इसने नई कर व्यवस्था और भू-स्वामित्व प्रथा आरंभ की जो छोटे कुलीन वर्ग के लिए लाभदायक थी, जबकि बड़े भूस्वामी अपने पूर्ववर्ती

विशेषाधिकार प्राप्त नहीं कर पाए। खुसरो प्रथम (531-579 सी ई) साम्राज्य को वैभव और समृद्धि की स्थिति में लेकर आया। इसने मज़द्काइट्स द्वारा उत्पन्न अव्यवस्था को नियंत्रित किया और कर प्रणाली तथा सैन्य क्षेत्र में अनेक सुधार किए।

13.4 बाइज़ेंटाइन और सासानियन संबंध

सासानियन लगातार रोम और बाइज़ेंटाइन के विरूद्ध युद्ध में व्यस्त रहे। शापुर तृतीय के पुत्र याज़देगर्द प्रथम (399-420 सी ई) जैसे शासक बाइज़ेंटाइन के विरूद्ध आक्रमण करने के लिए आमादा थे, परन्तु प्रतीत होता है कि जो राजदूत ईरान भेजे गए थे उन्होंने उनकी नीतियां बदलने में सहायता की। आगे चलकर याज़देगर्द प्रथम के समय संबंधों में मधुरता आई। बाइज़ेंटाइन के शासक आर्केडियस (377-408 सी ई) ने उसे अपने पुत्र थिओडोरियस द्वितीय का अभिभावक बनने के लिए कहा। इस पर विवाद किया जा सकता है कि यह मात्र एक सामान्य सी अभिव्यक्ति थी परन्तु उस समय दोनों ही शासकों के लिए इसका बहुत बड़ा अर्थ था।

बहराम प्रथम के शासनकाल के दौरान बाइज़ेंटाइन के साथ सम्बंध तनावपूर्ण हो गए क्योंकि उसने अपने साम्राज्य में ईसाईयों पर पुनः अत्याचार आरंभ कर दिए थे। ये सुरक्षा के लिए बाइज़ेंटाइन की ओर भागे और वहां बहराम पंचम (420-438 सी ई) ने इन्हें प्रत्यर्पित करने की मांग की। हालांकि, थिओडोसियस द्वितीय (401-450 सी ई) ने इसे स्वीकार नहीं किया। इससे युद्धों का प्रकोप आरंभ हो गया जिसमें बाइज़ेंटाइन को कई लड़ाइयों में सफलता प्राप्त हुई। 422 सी ई में बहराम पंचम ने शांति के लिए प्रस्ताव रखा। बहराम पंचम ने अपने साम्राज्य में ईसाईयों को पूजा-अर्चना की स्वतंत्रता प्रदान की और बाइज़ेंटाइन के कॉकेशस में डर्बन दर्रे के रखरखाव में अपना योगदान देने के लिए तैयार हो गया।

बहराम पंचम का उत्तराधिकारी और पुत्र यार्देगर्द द्वितीय (438-457 सी ई) जैसे ही सत्ता में आया उसने बाइज़ेंटाइन के विरूद्ध शत्रुता छेड़ दी। थिओडोसियस द्वितीय (488-531 सी ई) के अधीन बाइज़ेंटाइन ने यथास्थिति को बनाए रखने के लिए उसके शिविरों में अपने सेनापति भेजे। कवाद प्रथम के शासनकाल के दौरान बाइज़ेंटाइन और सासानियों के बीच एक बार फिर से शत्रुता आरंभ हो गई क्योंकि इन्होंने डर्बन की सुरक्षा के लिए पैसा देने से इनकार कर दिया था। कवाद को अपने सहयोगी हेफ्थेलाइटों को पैसे चुकाने की आवश्यकता थी। शत्रुता के कारण साम्राज्य के उत्तर-पूर्व और दक्षिण भाग के थिओडोसिओपोलिस और अमिडा पर कब्ज़ा हो गया। बाइज़ेंटाइन और सासानियों के मध्य लड़ाई दोनों में से बिना किसी की असल जीत के चलती रही। 504 सी ई में बाइज़ेंटाइन के पास अवसर था कि वे अमिडा को फिर से प्राप्त कर सकते थे परन्तु वे ऐसा करने में असफल रहे। अंततः सात-वर्ष की संधि के साथ शांति स्थापित की गई जो आगे चलकर लम्बी समयावधि के लिए बढ़ा दी गई।

खुसरो प्रथम (अनुशेरवान के नाम से भी जाना जाता है) ने मज़द्काइट आंदोलन के द्वारा आई कठिनाइयों, जिनके बारे में पहले बताया गया है, का सामना करने के लिए बाइज़ेंटाइन के साथ इस शर्त पर शांति स्थापित की कि ईरानी कुछ विशेष किलों को खाली करेंगे और साथ ही यह कि वे कॉकेशस की सुरक्षा को बनाए रखने के लिए सहायता भी करेंगे। खुसरो प्रथम द्वारा कर व्यवस्था और सेना में किए गए सुधार संभवतः बाइज़ेंटाइन से प्रभावित थे, लेकिन इन सुधारों से जो सेना तैयार हुई उसका प्रयोग बाइज़ेंटाइन के विरूद्ध किया गया।

शांति काल के पश्चात् बाइज़ेंटाइन और सासानियों के मध्य फिर से शत्रुता छिड़ गई। खुसरो प्रथम की चिंता का मुख्य कारण पश्चिम में बाइज़ेंटाइनों द्वारा रोमन साम्राज्य की पुनःस्थापना था। सासानियों को लखमिद अरब (लगभग 300-602 सी ई तक दक्षिणी इराक़ का एक अरब साम्राज्य) और आर्मेनिया का समर्थन प्राप्त था। यद्यपि शासक जस्टीनियन प्रथम (527-565

सी ई) ने खुसरो प्रथम को युद्ध से हटाने की कोशिश की परन्तु वो असफल रहा। सीरिया की ओर जाती हुई खुसरो प्रथम की सैन्य टुकड़ियां एंटिओक पहुंच गई, जो कि पहले से ही कुछ साल पहले आए भूकंप को झेल रहा था, ऐसे में किसी सैन्य आक्रमण को सहन करने की उसकी स्थिति नहीं थी। शहर पर आक्रमण किया गया और उसे पूरी तरह जला दिया गया। जस्टीनियन ने शांति की गुहार लगाई और यह तय हुआ कि शांति तब स्थापित होगी जब बाइज़ेंटाइन पांच हज़ार पांउड सोना युद्ध क्षतिपूर्ति के तौर पर दे, इसके साथ ही हर साल पांच सौ पाउंड अदा करे। तथापि, खुसरो प्रथम ने वापसी के रास्ते में आने वाले बाइज़ेंटाइन शहरों से एक बड़ी राशि हड़प ली। उसने एक शहर की घेराबंदी भी कर ली थी और तब तक उन्हें नहीं छोड़ा जब तक लोगों ने शांति के बदले रकम नहीं चुका दी। इस कारण जस्टीनियन ने युद्ध विराम को रद्द कर दिया और अपने सेनापति को ईरान पर आक्रमण करने के लिए भेज दिया।

मानचित्र 13.3 : चौथी से सातवीं शताब्दी के मध्य बाइज़ेंटाइन/रोमन और सासानिद साम्राज्य की सीमाएं

साभार: स्पलाकिडस

स्रोत: विकीमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Roman-Persian_Frontier_in_Late_Antiquity.svg)

ईरानी, पेत्रा सहित अनेक शहरों पर कब्ज़ा करने में सफल रहे जो बाइज़ेंटाइन के तहत थे। जस्टीनियन की सेना को दूसरे कई क्षेत्रों में पीछे हटना पड़ा। इस ख़बर से खुसरो प्रथम को आत्मविश्वास मिला कि वह बाइज़ेंटाइन को हरा सकता है। इस आशा से कि वह बाइज़ेंटाइन साम्राज्य के पूरे हिस्से और फरात के पार के हिस्सों को नियंत्रित करने में सफल रहेगा, खुसरो प्रथम ने इदेसा पर आक्रमण कर दिया। इदेसा के लोग जैसे-तैसे खुसरो प्रथम की सेना को पीछे ढकेलने में सफल रहे। उसे आखिरकार अपनी सैन्य टुकड़ियों को वापस बुलाना ही पड़ा और अंततः जस्टीनियन और खुसरो प्रथम के बीच पांच वर्ष की शांति स्थापित हुई। हालांकि, यह शांति संधि चौथे वर्ष में टूट गई। 551 सी ई में कुछ और समय के बाद पांच वर्ष का युद्ध विराम हुआ। भयानक संघर्षों की श्रृंखला के बाद 556 सी ई में दोनों के बीच में स्थाई हल निकालने की कोशिश की गई। अंततः 562 सी ई में बहुत कोशिशों से पचास वर्षों की शांति संधि पर हस्ताक्षर हुए।

THE PEOPLE'S UNIVERSITY

बोध प्रश्न-1

1) शापुर प्रथम और उसके उत्तराधिकारियों के शासनकाल के दौरान सासानिद साम्राज्य के विस्तार और वृद्धि के बारे में संक्षिप्त परिचय दें।

....

....

....

....

....

2) सासानिद साम्राज्य के अध्ययन के लिए विभिन्न स्रातों पर चर्चा करें।

....

....

....

....

....

3) सासानिद साम्राज्य के महत्वपूर्ण शासकों के कालानुक्रम पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

....

....

....

....

....

4) बाइज़ेंटाइन और सासानिद साम्राज्य के मध्य संबंध का विश्लेषण कीजिए।

....

....

....

....

....

13.5 प्रशासनिक संस्थाएं

सासानिद साम्राज्य का प्रशासन विस्तृत रूप से पार्थियन राज्य के प्रारूप जैसा था, जहां पर प्रांतों के शासक केन्द्रीय सरकार से अर्धस्वतंत्र होते थे तथा प्रांतों को शासित करते थे। इस प्रशासन के अधीन और भी राज्य थे, जिन्हें अधीनस्थ राज्यों के नाम से जाना जाता था, जो शासक को भेंट (tribute) अदा करते थे।

सासानिद साम्राज्य के संबंध में अधिकतर जानकारी हमें शापुर प्रथम के शिलालेख (एस.के. ज़ेड [SKZ] के नाम से जाना जाता है) से प्राप्त होती है। इस शिलालेख से हमें पता चलता है कि किस तरह प्रशासन व्यवस्था चलती थी। यहां पर चार शासक थे जो कि गवर्नर थे।

उनके पास उत्तराधिकार का अधिकर था, जिसका अर्थ था कि उनके बाद उनके बच्चे उनके उत्तराधिकारी बनेंगे। पदानुक्रम में गवर्नन के नीचे तीन रानियां, वॉयसराय, मंत्री और महत्वपूर्ण परिवारों के सदस्य थे। इन पंद्रह के साथ-साथ शिलालेख में अन्य महत्वपूर्ण उच्च पदाधिकारियों के बारे में भी उल्लेख मिलता है। ऐसा प्रतीत होता है कि पदानुक्रम में स्थान प्रशासनिक व्यवस्था में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के आधार पर दिया जाता था। कुलीन समाज चार भागों में बंटा हुआ था: अधीनस्थ राजकुमार, महान् परिवार, द 'ग्रेटस'[3] और कुलीन।

प्रशासन में लगभग एक दर्ज़न पद विभिन्न पदाधिकारियों को दिए गए थे। हालांकि, यह स्पष्ट नहीं है कि उन अधिकारियों के कार्यों की प्रकृति क्या थी क्योंकि धार्मिक और राजनैतिक अधिकारियों में भेद करना कठिन है। अग्नि मंदिरों में कार्यान्वन के लिए *मागियों* (ज़ोरोस्टर के अनुयायी) की कई श्रेणियां थी। *राद* नामक अधिक समर्थ न्यायधीश के साथ *दादवर* द्वारा न्यायिक प्रकार्य संभाला जाता था।

विभिन्न मोहरों के जो अवशेष प्राप्त हुए हैं उनसे विद्वान सासानिद साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था के बारे में जानकारी हासिल करने में सफल रहे हैं। प्रशासन की मूल इकाई प्रांत था जो 'सत्रप' द्वारा शासित थी। कुछ प्रांतों को मिलाकर एक क्षेत्र बनता था जो कि *फ्रामदार* (इसके कार्यों के विषय में कोई जानकारी नहीं है) और एक *अमरगार* (लेखाकार) के नियंत्रण में होता था। सबसे छोटा संकाय जिला (*कुस्त*) था जहां धार्मिक प्राधिकार विशेषरूप से मज़बूत था।

13.5.1 कानून व्यवस्था

सासानिद साम्राज्य के लिए कानूनी व्यवस्था और कानून बहुत महत्वपूर्ण था। उन्होंने कानून के विशुद्धीकरण को बहुत महत्व दिया। *वेंदिदाद,* बाईबल की लेविटिकस संबंधी किताब के समरूप है, जो धर्म के कानून के अनुसार स्वीकार्य और अस्वीकार्य पर व्याख्या करती है। इस काल में कानून संहिताबद्ध नहीं था, बल्कि कुछ न्यायिक फैसलों के रूप में उपलब्ध था जो कि कुछ कानूनी परिस्थितियों के बारे में जानकारी देते हैं। *मदायान-ए हज़ार दादेस्तान* (हज़ार फैसलों की किताब) पारिवारिक कानून, सम्पत्ति कानून और न्यायिक कानून से सम्बंधित घटनाओं का एक विस्तृत संकलन है। इस काल में अधिकतर कानूनी रचनाओं की तरह, कानून की अवधारणा को धार्मिक मूल्यों की अवधारणा के आधार पर देखा जाता था। सासानियों के काल में *अवेस्ता* की कानूनी ***नस्कों*** ('किताबों') का भी प्रयोग किया जाता था, हालांकि, बहुत सीमित रूप में। इसके मुख्य कारणों में से एक यह है कि उस समय वहां दस्तावेज़ों में जो भाषा प्रयोग हुईं और जो कानूनी तर्क दिए गए हैं वे उस समय के समाज के लिए बहुत आदिम प्रतीत होते हैं। कानूनी लेखों का संकलन छठी शताब्दी बी सी ई के आरंभ में किया गया था और ये बदलती परिस्थितियों का सामना करने के लिए सक्षम नहीं थे। यहां पर कई मौखिक भाष्य *नस्कों* में सम्मिलित किए गए। इनका प्रयोग आरंभिक सासानी काल के दौरान कानूनी मसलों के लिए किया जाता था। इन प्रयासों ने सासानी कानूनी परंपरा में पुरानी कानूनी शब्दावली को शामिल करने में सहायता की।

साक्ष्य दशार्ते हैं कि उच्च श्रेणी के पुजारी भी न्यायिक संगठन से जुड़े हुए थे। यहां पर एक विशेष उदाहरण वेह-शापुर का है जिसने खुसरो प्रथम के शासन काल में '*एक आलेख*' लिखा जिसमें पूछताछ की प्रक्रिया के बारे में व्याख्या की गई थी। इस आलेख की कई नकलें देखने को मिलती हैं और ये मोहर द्वारा सत्यापित भी की हुईं हैं, इन्हें अलग-अलग प्रातों में बांटा गया था। इस समय की विधि पुस्तकों में सासानी शासकों द्वारा जारी किए गए कुछ आदेश भी संचित किए गए हैं। इसके अलावा, दरबार के दस्तावेज़, पूछताछ के उद्धरण और अभिलेखीय सामग्री उपलब्ध हैं जिनका इन विधि पुस्तकों में संकलन किया गया है।

[3] उच्च कुलीन लोग जो महत्वपूर्ण शाही उत्सवों में उपस्थित होते थे।

13.5.2 सेना

लगातार युद्धों में व्यस्त रहने के कारण सासानी साम्राज्य को एक महत्वपूर्ण सैन्य व्यवस्था की आवश्यकता थी। जैसा कि पहले बताया गया है खुसरो प्रथम के शासन काल के दौरान उसने कर व्यवस्था में सुधार किया ताकि सेना के लिए धन जुटाया जा सके। आरंभ में जो शुल्क एकत्रित होता था उसे कुलीन वर्ग को दिया जाता था, खुसरो प्रथम उसे केन्द्र सरकार के अंतर्गत लेकर आया। आरंभ में बड़े भूस्वामियों द्वारा अपनी सेना राजाओं की सेना को सहायता के लिए दी जाती थी, लेकिन सुधार के बाद खुसरो प्रथम अस्त्र-शस्त्र से लैस केन्द्रीय स्थाई सेना बनाने में सफल रहा जो केन्द्रीय सरकार द्वारा पोषित थी। सेना के इन अधिकारियों को छोटे गांव तनख्वाह के रूप में दिए जाते थे। इसने छोटे भूस्वामियों के एक नए वर्ग को जन्म दिया। खुसरो प्रथम ने सेना को भी परिधि के केन्द्र के समरूपी चार समूहों में बांटा[4]। ये सुधार प्राथमिक रूप से सेना के संगठन से सम्बंधित थे, हालांकि अस्त्र-शस्त्र और सैनिक ढांचा पूरे सासानी साम्राज्य काल के दौरान समान बना रहा।

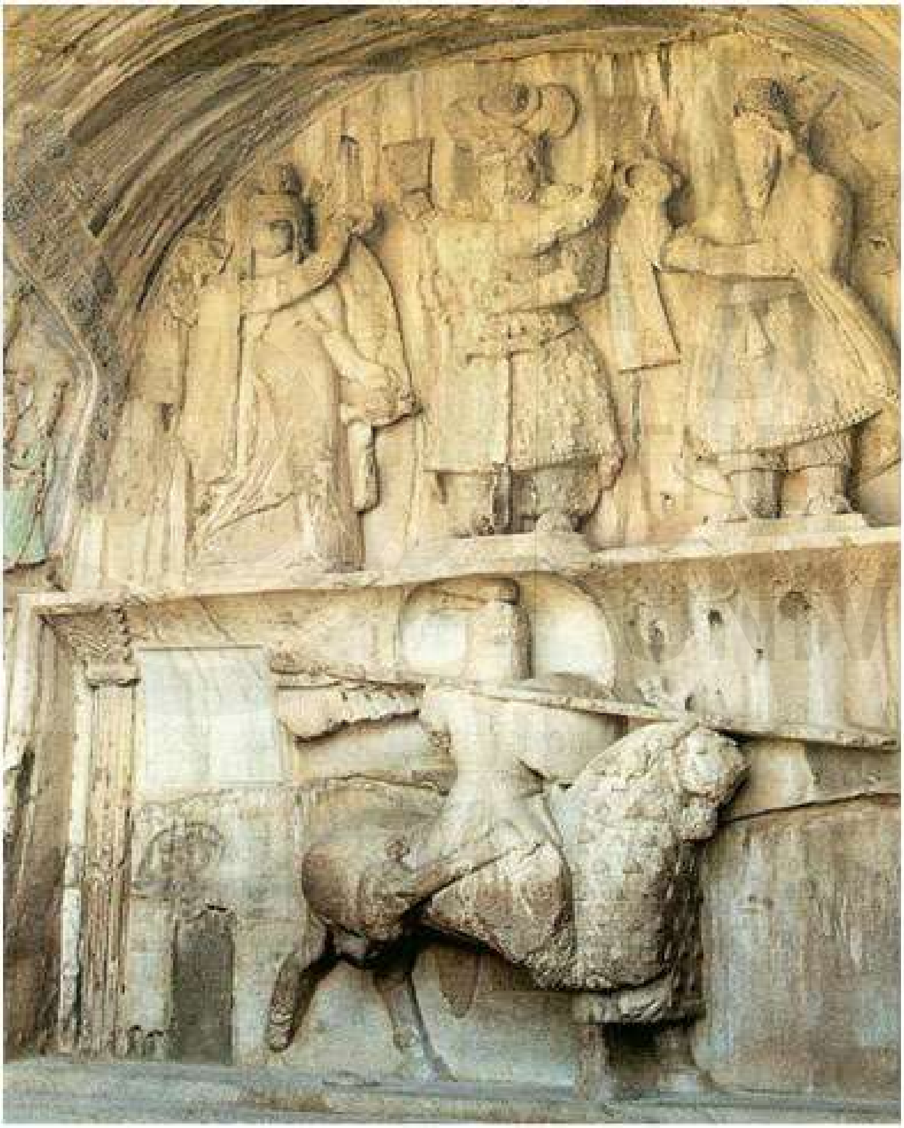

चित्र 13.1 : सासानी क्लिबनारी घुड़सवार के साजो-सामान का ताक-ए बोस्तान का शिला पट्टिका चित्रण
साभारः ज़ेरेश्क
स्रोतः https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Knight-Iran.JPG

[4] साम्राज्य का चार भागों में क्षेत्रीय विभाजन। पश्चिम में मेसोपोटामिया, उत्तर में कॉकेशस, मध्य में और दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र में ईरान की खाड़ी, पूर्व में मध्य एशिया। इस व्यवस्था ने अधिक कुशल सेना का निर्माण किया।

चित्र 13.2 : हेफ्थलाईट्स से युद्ध करते हुए सासानी सेनापति सुखरा, शाहनामा पेंटिंग
स्रोत: विकीमिडिया कॉमन्स (https://en.wikipedia.org/wiki/Sukhra%27s_Hephthalite_campaign#/media/File:Sukhra_defeating_the_Hephthalites.jpg)

ऐसा कहा जाता है कि सासानियों ने जो युद्ध कौशल विकसित किया था वह मुख्य रूप से बाइज़ेंटाइन की रणनीति की पुस्तकों से लिया गया था। इसके साथ ही विद्वानों का मत है कि यह कहना सही नहीं होगा कि ये सभी युक्तियाँ मात्र नकल ही थीं। लेकिन कुछ अपने अनुभव के आधार पर भी विकसित हुई होंगी जैसे सेना को इस तरह खड़ा करना कि उनका मुख सूर्य की तरफ न हो या घेरे की स्थिति में सेना की रसद की पूर्ति को सुनिश्चित करने की नीति।

13.5.3 रक्षा प्रणाली

सासानी किले और दीवारों का अच्छा उपयोग करके आक्रमणकारियों को बाहर ही रोक दिया करते थे। हालांकि, यह हमेशा प्रभावकारी नहीं था। सासानियों द्वारा बनाई गई दीवारों के कई सर्वोत्तम उदाहरण मिलतें हैं जैसे सासानियों द्वारा बनाई गई पांच दीवारों का समूह है जो कॉकेशस में डर्बेन्ट को उत्तर की ओर से आने वाले खानाबदोश आक्रमणों से बचाने के लिए बनाई गई थीं। पूर्वी दिशा में भी दीवारें बनाई गई थीं लेकिन उनके बारे में अधिक जानकारी नहीं है। एक 170 किलोमीटर लम्बी दीवार का निर्माण किया गया जो कि एलेक्ज़ेंडर की दीवार के नाम से जानी जाती है। इसके किनारे थोड़ी-थोड़ी दूरी पर किले बनाए गए थे और खाई भी बनाई थी ताकि उत्तर से आने वाले दुश्मन दीवार तक न पहुंच सकें। जस्टीनियन प्रथम के द्वारा बनाई गई दीवार के समानांतर बनाई गई किलेबंदी का श्रेय खुसरो प्रथम को जाता है। दक्षिण में केवल सिराफ में स्थित एक किले के साक्ष्य मिलते हैं।

रक्षा के लिए किले की दीवारों के अलावा शापुर द्वितीय ने सीमाओं पर कुछ अरबों को बसा दिया था ताकि रेगिस्तान से आक्रमण करने वाले अन्य अरबों और रोमनों के किसी भी आक्रमण का सामना किया जा सके।

चित्र 13.3 : डर्बेन्ट की दीवार
सभारः ऑस्कर 11234 (http://sulim27.livejournal.com/38236.html)
स्रोतः विकीमीडिया कॉमन्स (http://www.wikiwand.com/en/Fortifications_of_Derbent)

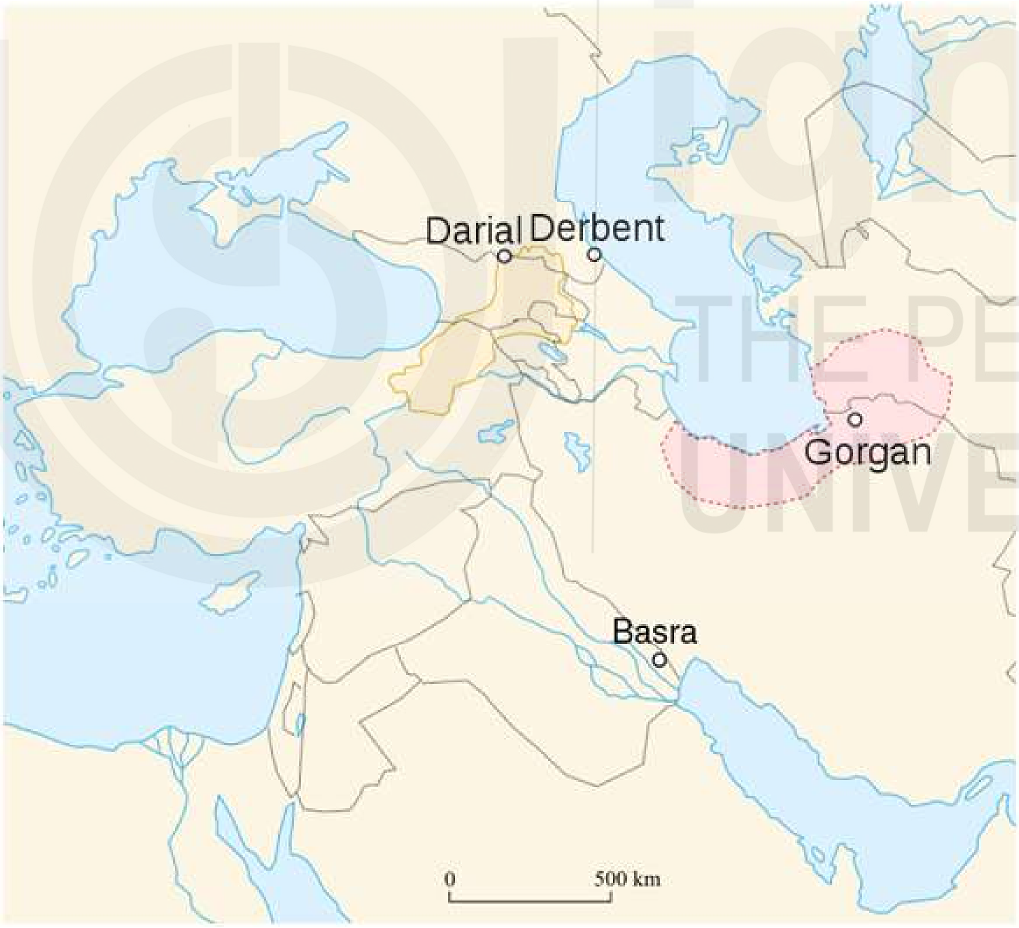

मानचित्र 13.4 : सासनीयों की सुरक्षा सीमाएंः डेरियल, डर्बेन्ट, गॉरगन और बसरा
साभारः user:Kiyoweap user:historicair (File: Hyrcania-Alexanders-gates-map.svg)
स्रोतः विकीमीडिया कॉमन्स (https://en.wikipedia.org/wiki/Sasanian_defense_lines#/media/File:Sassanian_defense_lines.svg)

13.5.4 अस्त्र-शस्त्र

सासानी सेना ने तीसरी और चौथी शताब्दी सी ई में अश्वरोही सेना को सबसे अधिक महत्व दिया। ये बख्तर, भाले और तलवार जैसे अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित थे। यद्यपि हल्की

अश्वारोही सेना का पतन होने लगा था, बाद में ये हूणों के विरूद्ध सेना का एक महत्वपूर्ण भाग बन गए, जो कि तीर-अंदाज़ी में उच्च कौशल के लिए पहचाने जाते थे। धनुष, जो ईरानियों द्वारा प्रयोग किया जाने वाला विशिष्ट हथियार था, सासानियों के समय में यह वज़न में काफी हल्का कर दिया गया। यह विकास इनके लिए प्रतिकूल साबित हुआ क्योंकि वे अब बाइज़ेंटाइन द्वारा प्रयोग किए जाने वाले तीर और धनुष को भेदने के योग्य नहीं रहे। अन्य हथियार जैसे दुरमुट (battering ram) और घूमने वाली लाट (moving tower) रोमनों से प्रभावित थे।

चित्र 13.4 : सासानी साम्राज्य और आरमेनिया के मध्य अवारयर के युद्ध को दर्शाती मध्यकालीन पाण्डुलिपि

साभारः कारापेट बेरक्रेत्सी

स्रोतः विकीमीडिया कॉमन्स (https://en.wikipedia.org/wiki/Battle_of_Avarayr#/media/File:Vartanantz.jpg)

चित्र 13.5 : सासानी योद्धाः सासानी काल की सोने की परत वाली चांदी की प्लेट, अज़रबाइजान संग्रहालय, तबरीज़, ईरान

साभारः अलबोर्ज़ फल्लाह

स्रोतः विकीमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Tabrç_Sasanian_Plate_2.jp)

13.6 अर्थव्यवस्था

शापुर प्रथम और द्वितीय दोनों ही अपने विस्तृत निर्माण कार्यों के लिए जाने जाते हैं। ऐसा माना जाता है कि बड़ी संख्या में, विशेषकर सीरिया से लाए गए मज़दूरों के कारण यह संभव हो सका। नए शहर, महल, बांध, पुल, किले और सिचांई व्यवस्था इनके द्वारा बनाई गई। सासानियों ने एलेक्ज़ेंडर और सेल्युकस की तरह शहरों के नाम स्वयं पर रखने की प्रथा को बनाए रखा।

शासकों के द्वारा कपड़े की कार्यशालाओं को स्थापित करना और बढ़ावा देना महत्वपूर्ण विकास कार्य में से एक था। छठी शताब्दी के आसपास ईरानियों का परिचय रेशम के कीड़ों से हुआ। शापुर द्वितीय ने रेशम पर काम करने के लिए कारीगरों को उपलब्ध कराया, लेकिन उसको विकसित कवाद और ख़ुसरो प्रथम ने किया जब कई विशेषज्ञ आए। ईरान, जो अब तक सिल्क के व्यापार में लगा हुआ था अब सिल्क की वस्तुओं का निर्यात भी करने लगा जो ईरान और रोमनों को सिल्क 'युद्ध' की ओर ले गया जो एकाधिकार की चेष्टा और कर के रूप में परिलक्षित होता है। कुछ रेशमी कपड़ों के नमूनों में जानवरों को भी चित्रित किया गया जिसमें वास्तविक मोटिफ जैसे मेढ़ा या काल्पनिक पंख वाला घोड़ा थे। मेढ़ा वास्तविक था जबकि *सीमुर्घ* जो कि मोर और ग्रिफिन (griffin) के मध्य एक संकर प्रजाति है।

चित्र 13.6: सासानी कालीन कपड़े पर सीमुर्घ
साभार: http://www.hp.uab.edu/image_archive/ugp/
स्रोत: विकीमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Textile0001.jpg)

बांध तथा अन्य सिचांई की सुविधाओं के निर्माण ने कृषि में उत्पादन को बढ़ावा दिया जिसके कारण अनाज, चावल और गन्ने का निर्यात संभव हुआ।

सिक्के इस समय के इतिहास को समझने के लिए बहुत महत्वपूर्ण स्रोत हैं क्योंकि ये एक निरंतरता प्रदान करते हैं। आरंभिक साम्राज्य के अर्दशीर प्रथम के सिक्कों की ढलाई ईरानियों के भूतकाल को समझने में मदद करती है (**चित्र 13.7**)। शुरुआत में खुदाई में प्राप्त सिक्के आरंभिक पार्थियन शैली से मिलते हैं, जैसा कि शासक का शीर्ष भाग उसके छायाचित्रों में देखने को मिलता है। बाद के कुछ वर्षों में यह बदल गया जब दैवीय आकृतियां, जो कि सिक्कों पर छापी जाती थीं, उनके स्थान पर अग्नि वेदी को लाया गया। इसके साथ ही सिक्कों पर यूनानी भाषा को पहलवी द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया। सिक्कों पर जो चित्र बदला गया आरंभ में उसमें कुछ तत्व समाविष्ट थे जैसे पार्थियन शैली के भित्तिचित्र में ताज, बाद में इसे मात्र ताज में बदल दिया गया। अंततः प्रत्येक सासानी शासक के ताज की अपनी विशेषताएं थीं जो कि इन सिक्कों में बेहतर तरीके से दर्शायी गई हैं।

चित्र 13.7 : अर्दशीर प्रथम के सिक्के (224-240 सी ई)
साभारः क्लासिकल न्यूमिसमेटिक ग्रुप
स्रोतः विकीमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:BahramVCoinHistoryofIran.jpg)

सासानी सिक्के इसलिए भी अधिक महत्वपूर्ण हैं क्योंकि ये प्रथम असली पतले-चपटे सिक्के थे। इस तरह के सिक्के उस समय बहुत प्रचलन में थे और समय के साथ-साथ और जगहों पर भी प्रचलित हो गए। इनका प्रभाव अरब और बाईज़ेंटाइन सिक्कों पर भी देखा जा सकता है। यूरोप में मध्यकाल से आधुनिक काल के दौरान इसी तकनीक का प्रयोग करके *देनार, देनीयर* और *पेनी* बनाए गए (**चित्र 13.8**)।

चित्र 13.8 : जस्टीनयन द्वितीय का सॉलीडस (solidus), द्वितीय शासन काल (705-711 सी ई)
साभारः क्लासिक न्यूमिसमेटिक ग्रुप
स्रोतः Wikimedia Commons (https://en.wikipedia.org/wiki/Byzantine_coinage#/media/File:Solidus-Justinian_II-Christ_b-sb1413.jpg)

सामान्यतः जो सिक्के प्रयोग किए जाते थे वे चार ग्राम के चांदी के ड्राच्म (*drachme*) थे जिनका वज़न कभी नहीं बदला। यह ध्यान देने योग्य है कि ये सिक्के अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत थे, विशेषकर मध्य एशिया और दक्षिणी रूस, वे क्षेत्र जिनके साथ ईरानियों के महत्वपूर्ण व्यापारिक संबंध थे। सोने का प्रयोग प्रतिदिन के उपक्रमों के लिए नहीं किया जाता था, इसका प्रयोग केवल स्मारकीय तमगों को बनाने में किया जाता था।

हालांकि सिक्कों की बारीकियों को पास से देखने पर अर्दशीर प्रथम और शापुर प्रथम के उत्तराधिकारियों के काल के ये सिक्के बहुत ही उत्तम गुणवत्ता के थे, जिनको देखकर ऐसा लगता है कि वे संभवतः यूनानी सांचा काटने वालों द्वारा बनाए गए थे। विद्वान इस दावे पर प्रश्न करते हैं, कुछ इसका यह कहकर खंडन करते हैं कि इन सिक्कों की गुणवत्ता में अर्दशीर प्रथम के गवर्नरशिप काल से उसके राजा बनने के संक्रमण काल के सिक्कों में कोई

विशिष्ट अंतर नज़र नहीं आता। इसी तरह शापुर प्रथम के सिक्कों में जहां काफी परिष्कृतता थी, इनमें गुणवत्ता संबंधी इतनी विभिन्नता नहीं थी कि जिसका साभार रोमन और यूनानी कारीगरी को दिया जा सके। अकेमीनियन शासकों के सिक्के उच्च गुणवत्ता के माने जाते हैं जो कि ईरानी सांचा काटने वालों द्वारा बनाए गए थे। यह भी संभव है कि सासानियों ने इसी पद्धति का अनुसरण किया हो।

सासानियों के सिक्के राजाओं के छायाचित्रों और उनके ताज के लिए विशेषकर उल्लेखनीय हैं। यह ईरानी शैली के छायाचित्रों का एक विशेष लक्षण था जिसके द्वारा आरंभिक आर्सेसिद परंपरा से इसे पृथक दिखाने की कोशिश की गई थी। इसके साथ-साथ इसका उद्देश्य रोमन परंपरा को भी चुनौती देना था। इसे ज़ोरास्ट्रियनवाद के विचारों को बढ़ावा देने की दृष्टि से भी देखा जा सकता है। छायाचित्रों की प्रकृति आर्सेसिद काल से अपने को पृथक करती प्रतीत होती हैं, जहां छायाचित्र में चेहरा सीधी ओर देखता हुआ बनाया जाता था। स्मारकीय सिक्कों के अलावा सामने की ओर देखते हुए चेहरों के छायाचित्र प्रचलित नहीं थे। सिक्कों के किनारों पर बने अभिलेख रोमन सिक्कों से प्रभावित थे। सिक्कों के चलन का पतन शापुर द्वितीय के शासन काल से देखा जा सकता है। पतन धातु की गुणवत्ता के साथ-साथ तकनीकी प्रारूप दोनों में ही देखा जा सकता है। सिक्कों पर बने चित्र लापरवाही से बनाए जाने लगे जिससे वे कार्टून सदृश्य व्यंग चित्र लगने लगे थे। ताज, जो प्रत्येक शासक की राजसी शान का प्रतीक था, अव्यवस्थित ढंग से बनाए जाने के कारण उन्हें पहचानना कठिन हो गया था। साम्राज्य के आरंभ के सिक्के जिनकी तुलना दीवारों पर बनी मूर्तियों से की जा सकती थी, बाद के समय में अपनी विशेषता खो चुके थे। कला की अन्य शैलियां अपेक्षाकृत अधिक विकसित हुईं, अतः सिक्के अधिक समय तक कला की व्याख्या में अपना स्थान बना कर नहीं रख सके, और इसलिए केवल अपने आर्थिक उपभोगी आधार के रूप में ही प्रचलित रहे।

चित्र 13.9 : शापुर द्वितीय का सासानी चांदी का सिक्का
साभारः रेज़ॉ अब्बासी संग्रहालय (ट्रुथबिथोवन)
स्रोतः विकीमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Shapur_II_Sassanid_silver_coin.JPG)

सासानी चांदी अक्सर सिक्कों के संदर्भ में पहचान और तिथिबद्ध भी की जाती रही है। सासानी चांदी की मुख्य विशेषता उस पर की गई नक्काशी की प्रकृति है। इन चित्रों पर मुख्यतः राजगद्दी पर बैठे हुए शासक या शिकार का चित्रण अंकित हैं। सिक्कों को संदर्भ बिन्दु मानते हुए सिक्कों के दोनों तरफ बने चित्रों की तुलना के आधार पर चांदी के प्रयोग का

तिथिक्रम निर्धारित किया जा सकता है। इसके साथ ही यह भी ध्यान देने योग्य है कि सिक्कों की अपनी परिसीमा थी जिसके कारण सिक्कों पर छायांकन उतनी बारीकी से संभव नहीं था क्योंकि उससे कहीं अधिक परिष्कृत और सूक्ष्म नक्काशी वाले ताज मौजूद थे। फिर भी यह देखा जा सकता है कि चांदी की वस्तुएं विस्तृत मात्रा में थीं जिनमें प्लेट और बर्तन जैसे कि कटोरे। इनके बारे में सवाल उठता है कि इन्हें कहां और किनके लिए बनाया गया था। कुछ बड़े कटोरों पर शेर और औरतों के ऊपरी अर्ध भाग के चित्रण की सजावट मिलती है। ऐसा माना जाता है कि बिना ताज वाले व्यक्ति विशेष शासक या देवी-देवता नहीं होंगे, बल्कि वे कुलीन वर्ग के प्रतिनिधि या राज परिवार के सदस्य रहे होंगे।

बोध प्रश्न-2

1) सासानियों के अंतर्गत कानून व्यवस्था पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

....

....

....

....

....

2) सासानी साम्राज्य की असाधारण रक्षा प्रणाली की विशेषता पर चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

....

3) सासानियों के लिए मज़बूत सेना की आवश्यकता को रेखांकित कीजिए। वे किस प्रकार अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित थे?

....

....

....

....

....

4) सासानी सिक्कों के महत्वपूर्ण लक्षणों को दर्शाइए।

....

....

....

....

....

13.7 सामाजिक व्यवस्था

सासानी सामाजिक संस्थाओं का विकास समाज में लम्बे अन्तराल के दौरान हुआ। उपलब्ध स्रोतों के आधार पर समाज का एक विस्तृत चित्र प्रस्तुत करना बहुत कठिन है। हालांकि, ऐसा प्रतीत होता है कि एक विशेष समयावधि में समाज में कोई परिवर्तन नहीं आया बल्कि यह रूढ़िवादी और स्थिर प्रकृति की ही रही। दिलचस्प यह है कि ईरानी समाज की प्रकृति जटिल थी जो कि बहुत अधिक स्तरीकृत थी। शासक वर्ग में न केवल राजा और उसका परिवार और कुलीन वर्ग था बल्कि इसमें वे शासक भी थे जो सम्राट के अधीनस्थ सामंत थे, इसमें दरबार के सदस्य और समृद्ध उच्च अधिकारी भी सम्मिलित थे। मध्यम और छोटे सेवारत अभिजात्य वर्ग को राज्य भुगतान, राशन और भूमि के द्वारा पोषित करते थे और कुछ विशेष मामलों में ये वंशानुगत थे। समाज के अन्य घटकों में पुजारी, मध्यमवर्ग, जो मुख्यतः व्यापारी और कारीगर थे, बड़ी संख्या में ग्राम्य के समुदायों में रहने वाले और अंततः दास भी सम्मिलित थे। इस काल में इस क्षेत्र में घूमने वाले बड़ी संख्या में घुमंतु खानाबदोश समूह भी थे।

समाज चार प्रमुख वर्गों में विभाजित था। पहले में पुजारी और न्यायधीश, दूसरे में योद्धा, तीसरे में लिपिक और बड़ी संख्या में नौकरशाह और अंत में चौथा वर्ग कृषक, व्यापारी और कारीगरों का था। यह वर्ग विभाजन अत्यन्त कठोर और वंशवाद पर आधारित था। एक वर्ग से दूसरे में जाना संभव नहीं था। प्रत्येक वर्ग की देखभाल के लिए एक प्रशासक होता था जो उस वर्ग से होना जरूरी नहीं था। पांचवी शताब्दी से प्राप्त साक्ष्यों के अनुसार प्रधानमंत्री के पुत्रों को विभिन्न वर्गों का अध्यक्ष नियुक्त किया गया था। हालांकि, इन संस्थागत परिवर्तनों ने नागरिकों और गैर-नागरिकों, कुलीन वर्ग और अन्य में आंतरिक असामनता को खत्म नहीं किया। इन सभी विविध समूहों के साथ-साथ दास भी समाज में मौजूद थे जिनके पास कोई अधिकार नहीं थे।

इस काल में यह देखा जा सकता है कि एक नागरिक को पूर्ण नागरिकता के अधिकार तभी प्राप्त हो सकते थे जब वह किसी न किसी वर्ग से सम्बंधित हो और नागरिक समुदाय विशेष का भाग हो। इसका अर्थ यह था कि यदि वह किसी समुदाय का हिस्सा नहीं थे तो उनके साथ बहिष्कृत की तरह ही व्यवहार किया जाता था। नगर समुदाय का भाग होने पर ही वे वहां रह सकते थे और सम्पत्ति खरीद सकते थे। समुदाय का अर्थ था मज़बूत सामाजिक संबंध जो कि इसके सदस्यों को सहयोग और एकता देता था। वे अनाथ बच्चों तथा विधवाओं की सामुहिक रूप से देखभाल करते थे। सिर्फ समुदाय के सदस्य ही धार्मिक पूजा-पाठ और सामाजिक गतिविधियों में भाग ले सकते थे। औरतों और बच्चों के पास सीमित कानूनी अधिकार थे।

जो व्यक्ति ज़रतुश्त धर्म का त्याग कर देता था उसे अपने पूर्व परिवार अथवा समुदाय में किसी भी पद पर बने रहने की अनुमति नहीं थी। हालांकि उसे व्यक्तिगत संपत्ति रखने और पहले से लिए हुए करार को पूरा करने की अनुमति थी। लेकिन अन्य समुदाय का भाग बनने के बाद वह अपना स्थान दूसरे समुदाय विशेष के सदस्य के तौर पर पुनः ग्रहण कर सकता था तथा तदनुसार कार्य कर सकता था।

जो समुदाय का हिस्सा नहीं थे उनमें, प्रदेश में यूं ही बस गए लोग, पूर्ण नागरिक अधिकार वाले नागरिकों के गैर-कानूनी बच्चे और स्वतंत्र दास या समुदाय से निकाल दिए गए लोग सम्मिलित थे। इसका अर्थ यह था कि दासों के विपरीत वे स्वतंत्र लोग थे, लेकिन उनके कोई नागरिक अधिकार नहीं थे। दासों को वस्तु समझा जाता था जिन्हें इच्छानुसार बेचा जा सकता था। दासों को भूमि के एक भाग की तरह ही या फिर व्यक्तिगत रूप से उनका प्रयोग किया जा सकता था। हालांकि यह दासों के आम लक्षण हैं लेकिन विद्वानों का मत है कि यह एक

तरफा दृष्टिकोण है। धार्मिक और कानूनी ग्रंथों के अध्ययन से यह पता चलता है कि दास को 'व्यक्ति' समझा जाता था क्योंकि उसमें बोलने, सोचने और कार्य करने की क्षमता थी। यह परिभाषा दास को मालिक द्वारा खरीदी गई अन्य 'वस्तुओं' से अलग करता है। प्रशिक्षण देकर दास से कई कार्य करवाए जा सकते थे जिसमें आर्थिक कार्य भी सम्मिलित हैं जो कि सीमित अधिकारों के क्षेत्र में था। जिन्हें मालिक, दास को कुछ हद तक कार्य करने की अनुमति दे सकता था। कानून की पुस्तकों में दासों के नागरिक मामलों में कोर्ट में पेशी के साक्ष्य भी मिलते हैं। यहां पर दासों के द्वारा मालिकों पर क्रूर व्यवहार के लिए किए गए मुकद्दमों के साक्ष्य भी मिलते हैं। एक मामले में दास ने मालिक पर उसे दज़ला (Tigris) नदी में फेंकने का आरोप लगाया था। दूसरे मामले में कोर्ट ने मालिक को दास के शरीर को विकृत करने के अपराध में जुर्माना भरने का आदेश दिया था। कोर्ट में दास गवाही भी दे सकता था लेकिन अकेले स्वतंत्र रूप से नहीं बल्कि उसके साथ एक पूर्ण नागरिक की गवाही की भी आवश्यकता थी। मालिकों द्वारा दासों को पूर्ण या आंशिक रूप से दासता से मुक्त किया जा सकता था। यहां पर वे दास भी थे जिन्हें 'मंदिर के दास' या पवित्र दास, *हाइर्डओलोई* (*hierdouloi*) के नाम से जाना जाता था। ये आदमी और औरत दोनों में से कोई भी हो सकता था लेकिन ये अन्य दासों से अलग थे क्योंकि इनका संबंध मंदिर से था जो पूर्ण रूप से धार्मिक था। ये सभी मंदिर के प्रति समर्पित थे। इन व्यक्ति विशेषों को 'आदमियों के समक्ष स्वतंत्रता' थी लेकिन इनकी 'दासता' 'अग्नि' से थी, यह अग्नि जरतुश्त धर्म से संदर्भित थी और जो पूर्ण नागरिक की पात्रता के लिए आवश्यक थी। इसलिए, इस दासता को सासानियों की दास व्यवस्था का रूप नहीं माना जा सकता क्योंकि यह धार्मिक व्यवस्था से सम्बंधित थी।

13.8 संस्कृति

हालांकि, अर्दशीर प्रथम के समय में सासानी कला और मूर्तिकला में वृद्धि हुई, लेकिन यह पूर्वकालिक कला की निरंतरता थी। इसका एक कारण यह था कि अर्दशीर प्रथम यद्यपि शासक बना, फिर भी पार्थियनों पर पूरी तरह से नियंत्रण नहीं कर सका। यहां तक कि मुद्रा प्रणाली जो कि सासानियों का महत्वपूर्ण योगदान था, वह भी पूर्व के ईरानी शासकों की परम्पराओं की निरंतरता की पुनःपुष्टि करती है। इन सिक्कों की कला की प्रकृति में जो परिष्करण था, वह साम्राज्य की आरंभिक उकेरी हुई मूर्तिकलाओं में भी देखा जा सकता है। बढ़ते हुए समय के साथ उच्च स्तर की मूर्तिकला का पतन हुआ और कला की कलात्मकता कम होती गई। इस काल में धार्मिक साहित्य की प्रधानता के अतिरिक्त कुछ लौकिक साहित्य लेखन भी देखा गया जो भिन्न था।

13.8.1 वास्तुकला

अधिक खुदाई न होने के कारण सासानी वास्तुकला के संबंध में अधिक जानकारी प्राप्त नहीं हो सकी है। हालांकि, किलों और महलों के अवशेषों का अध्ययन करके विद्वान राजाओं की समृद्धि और राजाओं का कला के प्रति प्रेम का विवरण देने में सफल हुए हैं। अरब-ईरानी स्रोतों के अनुसार इन इमारतों के लिए मज़दूर मुख्यतः सीरिया से आए जहां से जनसंख्या बड़ी संख्या में ईरान की ओर विस्थापित हुई। इन मज़दूरों के द्वारा शहरों, बांधों, किलों और सिचांई संसाधनों का निर्माण किया गया।

सासानी वास्तुकला को मेहराबी छत, गुम्बद और *ईवान,* जो कि चारों ओर कमरों से घिरा आंगन होता है, जो महलों में एक आम स्थान के रूप में बनाया जाता था से चिन्हित किया जाता है। रिहायशी मकान आंगन के चारों ओर स्थित होते थे। यह योजना महलों के निर्माण के लिए मानक बन गई। इमारतें अक्सर **गच्चीकारी (stucco)** से सज्जित की जाती थीं। क्योंकि इमारतों की निर्माण-सामग्री में एशलर (अच्छी तरह तराशे हुए पत्थर) की बजाय बिना तराशे हुए पत्थर और मोर्टार (पत्थर को जोड़ने के लिए) का प्रयोग किया जाने लगा।

चित्र 13.10 : अर्दशीर प्रथम का महल, फिरूज़ाबाद, ईरान
साभारः अली पारसा
स्रोतः विकीमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/Category:Palace_of_Ardashir#/media/File:Ardeshir.jpg)

कुछ इमारतों का स्रोतों की मदद से कल्पना के साथ पुनःनिर्माण किया जा सकता है इनमें अर्दशीर प्रथम का फिरूज़ाबाद में स्थित महल भी है। यह सासानी साम्राज्य के पहले के समय का बना हुआ है इसे अर्दशीर, जो उस समय फार्स का राजकुमार था, ने बनवाया था। ऐसा माना जाता है कि यह महल जिस स्मारकीय शैली और प्रकार का प्रतिनिधित्व करता है वह फार्स में एक सामान्य स्तर पर विकसित थी। महल की योजना अकेमिनिडों की वास्तुकला शैली का अनुसरण करती प्रतीत होती है। इनमें प्रयोगित शैली के अनुसार इसमें दो मुख्य परिसर होने चाहिए, आम और कार्यालयी या *अपादान* और व्यक्तिगत रिहायशी *हरम* परिसर और दोनों ही एक दूसरे से जुड़े हुए होते थे। *अपादान* पार्थियन शैली में एक बड़े विस्तृत *ईवान* में बना हुआ था। हालांकि, यहां *ईवान* की खुली प्रकृति में परिवर्तन कर उसे गलियारे (प्रकोष्ठ या प्रवेश कक्ष) में परिवर्तित किया गया जो एक बड़े कमरे की ओर जाता है जो कि संभवतः आमंत्रण कक्ष या सिंहासन कक्ष हो सकता है। चौकोर कमरे पर एक बड़ा गुम्बद था जो **स्क्विंच (squinch)** (बड़े ढांचे पर गुम्बद को उठाने के लिए चौकोर कक्ष के आंतरिक कोने पर सीधा या मेहराबदार ढांचा [dome]) पर बनाया जाता था। स्क्विंच सिद्धांत गुम्बद के निर्माण में सासानी वास्तुकला के महत्वपूर्ण योगदानों में से एक था। यह प्रारूप भविष्य में भी प्रयोग किया गया, यहां तक कि बाद के वर्षों में मस्जिदों की वास्तुकला के निर्माण में भी इसने सहायता की। उसमें खिड़की के लिए कोई व्यवस्था नहीं थी और रोशनी गुम्बद की संकरी दरार से आती होगी।

सारांश में फिरूज़ाबाद के महल के फर्श की योजना विशाल आयताकार थी जो उत्तरी भाग में पूरी इमारत की अपेक्षा ज़रा सी उठी हुई थी। यह आम जनता के लिए स्थान था जिसमें प्रवेश खुले *ईवान* के द्वारा होता था। *ईवान* के दोनों ओर समकोण कमरे थे, उनके ऊपर बेलनाकार मेहराबदार छतें (vaults) थीं। तीन बड़े चौकोर कमरे, सिंहासन का कमरा और सेवकों की कोठरियां परिसर के दक्षिण में प्राप्त हुए हैं। इन सभी के ऊपर गुम्बद थे जो बगली द्वार (स्क्विंच; squinch) पर बनाए गए थे। रिहायशी परिसर के लिए जो प्रवेश द्वार था, वही हवा के आने-जाने का एकमात्र ज़रिया था। उसके ठीक विपरीत दिशा में हवा के प्रसार के

लिए एक अन्य दरवाज़ा था। ऐसा प्रतीत होता है कि दरबार के हिस्से में वर्णित किया छोटे व्यक्तिगत रिहायशी घर बने हुए थे जिनकी छतें बेलनाकार थीं। जैसा कि ऊपर वर्णित किया गया है कि जल्दी सूखने वाले जिप्सम और मोर्टार को ढकने के लिए गच्चीकारी (stucco) का प्रयोग किया गया जो कि ऐतिहासिक काल से निर्माण कार्य में प्रयोग होने वाली उपलब्ध स्थानीय सामग्री थी।

यद्यपि यह मुख्य योजना थी जिसका प्रयोग अधिकतर महलों के निर्माण में किया गया, लेकिन बिशापुर और टेसिफोन स्थित शापुर प्रथम के शासन काल के दौरान बने महलों में इसमें में अधिकतर बदलाव देखा जा सकता है। इन महलों में अधिकतर पार्थियन और हेलिनिस्टिक लक्षणों को अपनाया गया था। टेसिफोन के महल के संदर्भ में इसकी अवस्थिति पर तर्क दिया जा सकता है क्योंकि यह पुराने स्थित पार्थियन महल के ऊपर बनाया गया था। *ईवान* बंद आंगन की ओर जाता था और दूसरी ओर भी इसी तरह की समान संरचना बनी हुई थी। महल की योजना काफी हद तक असुर के पार्थियन महल से ली गई थी। आकार के मामले में इस महल का अपना विशेष महत्व है, यह पार्थियनों के द्वारा निर्मित किए गए अन्य सभी महलों से कहीं अधिक विशाल था। दुर्भाग्यवश इनमें से अधिकतर बचे नहीं। नींव के अवशेष संकेत देते हैं कि इमारत पांच विशाल आयताकार कमरों में विभाजित थी। ये गलियारों से जुड़े हुए थे और अलग-अलग आकार और आकृति वाले छोटे कमरों के द्वारा अलग किए हुए थे। विद्वानों का मत है कि बड़े कमरों के ऊपर बेलनाकार मेहराबदार छतें (vaults) थीं जबकि छोटे कमरों के ऊपर गुम्बद थे।

चित्र 13.11 : टेसिफोन का मेहराबी द्वार, सासानी राजधानी शहर टेसिफोन का एकमात्र मौजूदा अवशेष

साभारः सेन डिआगो एअर एंड स्पेस म्यूज़ियम

स्रोत: विकीमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Ctesiphon_Arch.jpg)

बिशापुर की खुदाई द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान बाधित हुई और बाद में दुबारा कभी इसकी शुरुआत नहीं की गई। इसमें सिर्फ एक दूसरे को काटते हुए कमरे मिले हैं जो चार क्रॉस की आकृति में उसकी मेहराबनुमा छत के सबसे ऊपर एक बड़ा गुम्बद है जिससे पूरा परिसर घिरा हुआ था। इस क्षेत्र के अंतर्गत एक अग्नि मंदिर भी स्थित था। जबकि जिप्सम, छोटे अनगढ़ पत्थर और चूने का प्रयोग लगातार होता रहा जिससे यह महल अलंकरण में अद्वितीय है जो कि यूनानी-रोमन कला से प्रेरित प्रतीत होता है। खड़े हुए आदमियों या घोड़े की पीठ पर सवारों के कुछ नक्काशी वाले अलंकरण पूर्ण रूप से पर्सिपोलिस से लिए गए हैं।

चित्र 13.12 : ईरान में बिशापुर में शापुर प्रथम के महल के फर्श पर ईरानी-रोमन पच्चीकारी कला (**mosaic**) का अलंकरण
साभारः कोरडनराड
स्रोत: विकीमीडिया कॉमन्स (https://en.wikipedia.org/wiki/Bishapur#/media/File:Mosaic01.jpg)

13.8.2 कला और मूर्तिकला

गच्चीकारी (stucco) का प्रयोग विभिन्न चित्रकलाओं की सज्जा के तौर पर किया गया जिसमें मुख्यतः युद्ध और शिकार के दृश्य देखे जा सकते हैं। इन दृश्यों में सुन्दर फूल-पत्तियां और ज्यामितीय आकृतियां भी सजावट के लिए प्रयोग की गई हैं।

चित्र 13.13 : लड़ती हुई जंगली-बकरियों (आइबेक्स) का गच्चीकारीयुक्त चित्रण, 5-6 शताब्दी
साभारः देदेरो
स्रोतः विकीमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wikiFile:Relief_plaque_with_confronted_ibexes,_Iran,_Sasanian_period,_5th_or_6th_century_AD,_stucco_originally_with_ polychrome_painting_-_Cincinnati_Art_Museum_-_DSC03952.JPG)

चित्र 13:14 : अनाहिता पात्र, 350-500 सी ई सासानिद चांदी और सोने की परतयुक्त, ईरान
साभारः देदेरो
स्रोतः विकीमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Anahita_Vessel,_300-500_AD,_Sasanian,_Iran,_silver_and_gilt_-_Cleveland_Museum_of_Art_-_DSC08131.JPG)

विशाल नक्काशीदार मूर्तियां सासानी काल की कला की मूल विशेषता है। आरंभिक वर्षों में एक मूर्ति के अलावा अधिकतर मूर्तिकलाएं मुख्य रूप से फार्स में बनाई गईं थीं। इस कला द्वारा व्यक्तियों और उनकी गतिविधियां अमर हो गई। हालांकि, यह इनकी मूल शैली नहीं थी बल्कि इस तरह की स्मारकीय मूर्तियां अक्काडियनों के अंतर्गत भी देखी गई। इन मूर्तियों का विकास तीसरी शताब्दी सी ई में हुआ प्रतीत होता है। यह ध्यान देने योग्य है कि अधिकतर मूर्तियां नदियों या पानी के स्रोतों के पास ही प्राप्त हुई हैं। इन मूर्तिकलाओं में मुख्य रूप से दो मूल विषय देखने को मिलते हैं। एक जिसमें देवी-देवता राजा को शक्ति से विभूषित करते हुए दिखते हैं। यह फीते में अंगूठी के चित्रण द्वारा दिखाया जाता है जो कि शक्ति का प्रतीक है। हालांकि ऐसा विश्वास था कि ये दृश्य धार्मिक लक्ष्यार्थ से बनाए गए थे परन्तु ऐसा माना जाता है कि ये मुख्यतः राजनैतिक प्रचार के लिए बनाये गये थे। यह इस विचार के प्रचार के लिए किया गया था कि शासक दैवीय शक्ति से विभूषित है। ऐसा चित्रित करते हुए कलाकार ने शासक और देवी-देवता को एक दूसरे के प्रतिबिम्ब की तरह दिखाया है जैसा कि नक्श-ए रूस्तम की नक्काशी में भी देखा जा सकता है। यहां अर्दशीर प्रथम और अहुरा मज़दा[5] को घोड़े की पीठ पर संतुलित रूप से एक दूसरे के समानान्तर आमने-सामने बैठा हुआ दिखाया गया है। देवी-देवता और शासक दोनों के पैरों में विरोधियों को लिटाया हुआ दर्शाया गया है।

चित्र 13.15 : अर्दशीर प्रथम अहुरा मज़दा से शक्ति की अंगूठी प्राप्त करते हुए

सभारः हारा 1603

स्रोतः https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Naqsh-e-Rostam_(Iran)_Relief_Sassanid_Period.JPG

दूसरे मूल विषय में शत्रु पर विजय का चित्रण देखा जा सकता है। आरंभिक मूर्तिकला फिरूज़ाबाद में बनाई गई जहां अर्दशीर प्रथम को पार्थियन सत्ता का तख्ता पलट करते हुए चित्रित किया गया। परंपरानुसार पूरी लड़ाई को चित्रित नहीं किया गया। वहीं दूसरी ओर, अर्दशीर प्रथम या उसके पुत्र को पार्थियनों के विरूद्ध घोड़े पर सवार होकर भाले से युद्ध करते हुए चित्रित किया है जिसमें उन्हें अपने विरोधियों को परास्त करता दर्शाया गया है। सबसे महत्वपूर्ण विकास यह देखा जा सकता है कि जहां आरंभिक मूर्तिकलाएं तुलनात्मक रूप से

[5] ज़रतुश्तों के सर्वोच्च और पूज्य देवता।

सीधे-सादे रेखाचित्रों द्वारा बनाई गई थीं, सासानियों द्वारा बनाई गई मूर्तियों में परिधानों, हथियारों, ताज आदि की विस्तृत व्याख्या देखने को मिलती है। दूसरा दिलचस्प उदाहरण मूर्ति के फलक (panel) का है जिसके बाईं ओर देवता ओहर्मज़ाद (आहुरा मज़दा) का घोड़ा अहरीमन[6] को कुचल रहा है जबकि दाईं ओर शापुर प्रथम का घोड़ा शासक गॉर्डियन तृतीय को अपने पैरों तले कुचले हुए है। उस समय में इस तरह के दृश्यों को चित्रित करना कलाकार की विशेष युक्ति थी। अन्य प्रकार के दृश्यों में शासक को दूसरे उच्च पदाधिकारियों या उसके परिवार से घिरा हुआ या शिकार करते हुए दिखाना भी बहुत प्रचलित थे। खुसरो द्वितीय के शासन काल के दौरान शिकार के दृश्य विस्तृत व्याख्या के साथ चित्रित किए गए हैं। अर्दशीर प्रथम के शासन काल के दौरान मूर्तिकला ने विशिष्ट ख्याति प्राप्त की और शापुर तृतीय (383-388 सी ई) के समय तक विकसित होती रही, तदनुपरान्त इसने अपना महत्व खो दिया। दो सौ वर्ष के बाद खुसरो द्वितीय (590-628 सी ई) के अधीन यह फिर से जीवित हुई। इसने नक्काशीदार मूर्तिकला को पवित्र स्थल ताक़-ए बुस्तान में मान्यता दी। यह सासानी कला का एकमात्र पूर्ण नमूना है जो बचा रहा। हालांकि इसमें जिस कला का प्रयोग किया गया उसकी पूर्ण व्याख्या नहीं की गई है और इसीलिए इसका महत्व पूरी तरह से समझे जाने की आवश्यकता है।

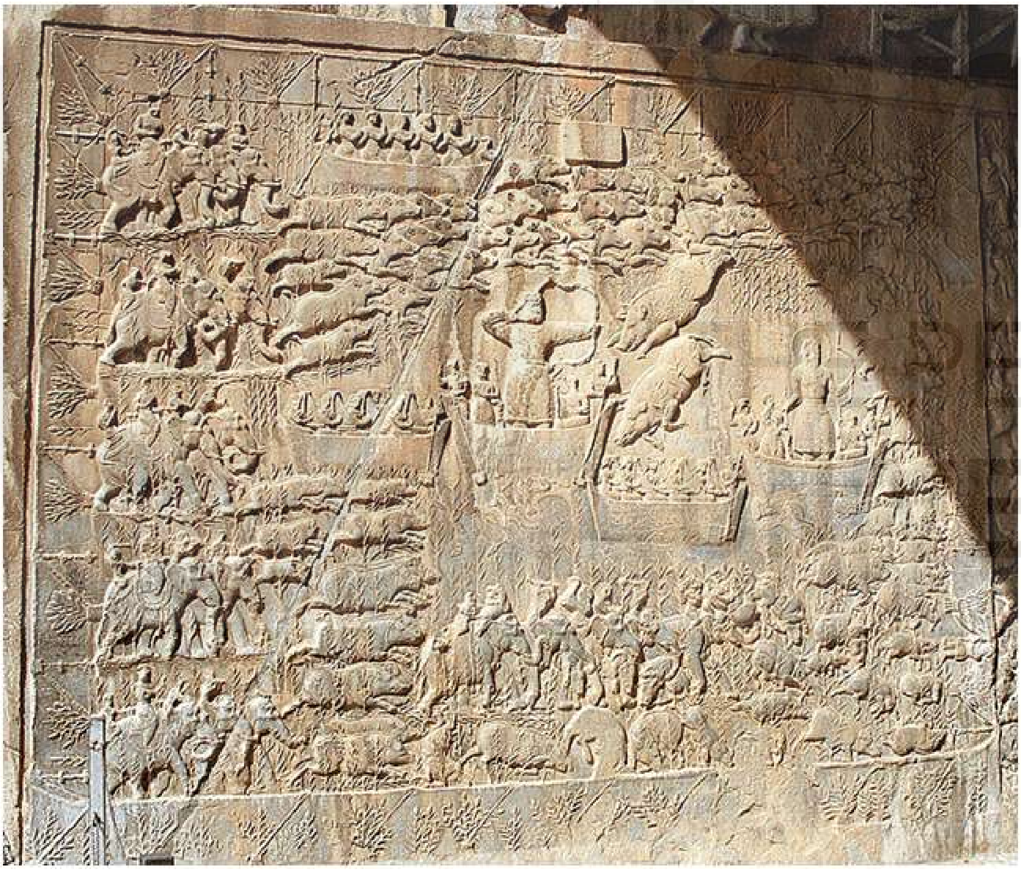

चित्र 13.16 : ताक़-ए-बुस्तान में सूअर का शिकार करते हुए
साभारः फिलिप केविन
स्रोतः विकीमीडिया कॉमन्स (https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Taq-e_Bostan_-_Low-relief_the_boar_hunt.jpg)

13.8.3 साहित्य

सासानी शासन काल में साहित्यिक ग्रंथ प्राप्त होने के कोई साक्ष्य नहीं मिलते। इन्होंने लिखित की बजाए मौखिक संप्रेषण को अधिक महत्व दिया। इस समय मुख्यतः जिस भाषा का प्रयोग किया गया वो यूनानी थी जो कम से कम तीसरी शताब्दी के बाद नहीं तो उसके

[6] अहुरा मज़दा का विरोधी; पाप का प्रतीक।

अंत तक प्रचलन में रही। इसके बाद अधिकतर पार्थियन प्रयोग की गई और सासानियों द्वारा कब्जा कर लेने के बाद भी बोली जाती थी। पहलवी या मध्य ईरानी भी प्रयोग की गई। ये दोनों भाषाएं केवल अरमाइक लिपि में लिखी जा सकती थीं, अतः वे भाषा की ध्वनि को सही से प्रतिबिम्बित नहीं कर सकीं। यहां पर शब्दों की ईरानी में व्याख्या के लिए शब्दकोश जैसी एक पुस्तक भी बनाई गई। वर्णमाला में कमी, घसीटा लिखावट और अन्य परिवर्तन होने के कारण उत्तर जीवी साहित्य को पढ़ना कठिन हो गया। अधिकतर साहित्य का संकलन नौवी और दसवी शताब्दी सी ई के दौरान किया गया।

समय के साथ केवल कुछ लौकिक साहित्य ही बच सका। लघु साहित्य जैसे *'खुसरो एंड द पेज'* जिसमें शासक एक युवा व्यक्ति से दरबार के तौर-तरीके संबंधी जानकारी मांगता है या पार्थियन मूल की कविता *मेमोरीस ऑफ ज़रेर* जो एक महाकाव्य का अवशेष है और पौराणिक शासक कयानिड्स के बारे में जानकारी देता है। *बुक ऑफ किंग्स* में पौराणिक और ऐतिहासिक शासकों के बारे में कहानियां संकलित हैं। इसके बारे में सिर्फ कुछ भाग अरबी अनुवाद से जाने जा सकते हैं और घुमा-फिराकर ग्यारहवी शताब्दी के फिरदौसी के *शाहनामा* से थोड़ा-बहुत पता चल सकता है।

यहां पर *अवेस्ता* के भाष्य का पहलवी भाषा में अनुवाद और इस समय के धार्मिक साहित्य की अधिक उपलब्धता है। अधिकतर साहित्य मज़दा धर्म के समर्थकों का है जो कि इस समय तक अल्पसंख्यक धर्म हो गया था। *स्कंद गुमेनिग* और *डेनकर्ड* इस तरह के साहित्य के उदाहरण हैं। यहां पर विश्व के पौराणिक इतिहास, ज़ोरास्टर की किंवदंतियां और 'मानव' की उत्पत्ति, जो साफ तौर पर यूनानी दर्शनशास्त्र से प्रभावित देखा जा सकता है, पर भी कुछ साहित्य मिलता है। ज़रतुश्त धर्म की विचारधारा का मूल विषय मृत्युपर्यन्त जीवन और आत्मा के विश्वास पर अधिक बल देता है। यह *अरदा विराज़ नामाग* में विराज़ की कथा में देखा जा सकता है। यह ईरान में बहुत प्रसिद्ध कथा है जिसमें दस्तावेज़ों के अनुसार शापित आत्माओं को बहुत भयानक दंड दिए जाने का उल्लेख है।

दादेस्तान-ए देनिग या पहलवी *रिवायत* ऐसे ग्रंथ हैं जो विभिन्न विषयों को एक साथ लाए। मज़दा धर्म का पतन हो रहा था, धर्मशास्त्री अपने धर्म से सम्बंधित कानून की सारी जानकारी, मतों और रीत-रिवाजों को बचाना चाहते थे। यह सब मध्यकालीन पाण्डुलिपि परंपरा के द्वारा आंशिक रूप से संरक्षित किए गए। मनिकाईनों के लेख बहुत हद तक बेहतर तरीके से संरक्षित किए गए क्योंकि धार्मिक नेता होने के नाते मनि को अपनी ब्रह्माण्ड संबंधी शिक्षाओं को विभिन्न भाषाओं में लिखने के लिए अपने शिष्यों का आश्रय प्राप्त था। मनि की शिक्षाएं मज़दा की बजाए, मूर्तिपूजक (pagan) और यहूदी ईसाई धर्म, जो कि उस क्षेत्र का धर्म था, की अध्यात्म विषय की समझ से अधिक प्रभावित प्रतीत होती हैं। विभिन्न विषयों पर मनि के साहित्य का एक बहुत बड़ा संकलन प्राप्त हुआ है जिसमें से कुछ का मध्य एशिया में बोली जाने वाली भाषाओं में भी अनुवाद किया गया।

बोध प्रश्न-3

1) उदाहरण सहित उन लक्षणों का विश्लेषण कीजिए जो सासानी वास्तुकला को चिन्हित करते हैं।

....

....

....

....

....

2) सासानी साम्राज्य के दौरान कला के कौन-कौन से रूप विकसित हुए?

....

....

....

....

....

3) सासानियों के अंतर्गत साहित्य के क्षेत्र में हुए विभिन्न विकासों का वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

4) सासानी साम्राज्य के दौरान सामाजिक संस्थाओं की मुख्य विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।

....

....

....

....

....

13.9 धर्म

सासानी काल से पहले के काल में यहां यहूदी, ईसाई और ज़रतुश्त धर्मों में आपस में बहुत संघर्ष था। विभिन्न धर्म एक दूसरे से समझौता करने की कोशिश कर रहे थे। इसका अंत सासानी काल में राज्य द्वारा स्वयं के रूढ़िवादी धर्म को स्थापित करने के साथ हुआ। सासानी काल के दौरान राज्य और धार्मिक संस्थाओं के बीच संबंध बहुत स्पष्ट थे।

मनिकाईवाद का संस्थापक, मनि (216-276 सी ई) ईरानी धार्मिक परिदृश्य पर सासानियों से पूर्व समय में आया। उसने ईरानी विचारों को बहुत आसान तरीके से प्रस्तुत करके बहुत महत्वपूर्ण प्रभाव छोड़ा। मनिकाईवाद का साहित्य बहुत अच्छी तरह से संरक्षित किया गया है क्योंकि मनि अपने अनुयाईयों से चाहते थे कि उनकी शिक्षा अधिक से अधिक भाषाओं में उपलब्ध हो। ऐसा माना जाता है कि इनके विचारों से सासानी शासक शापुर प्रथम बहुत प्रभावित था। उसने मनिकाईवाद को इसके अंतर्राष्ट्रीय चरित्र के कारण ज़रतुश्त मत से अधिक महत्व दिया जबकि उसका अपना पिता ज़रतुश्त का अनुयायी था। इस काल में ईरान में दी गई उसकी शिक्षाएं लोगों को प्रभावित करने में सफल रहीं। मनिकाईवाद व्यापार मार्ग के विकास की सहायता से बहुत आगे और सुदूर चीन तक फैल गया – जहां मनि को मिंग वंश तक बुद्धा का वैद्य उत्तराधिकारी माना गया, तत्पश्चात् चीन में इस व्याख्या को चुनौती दी गई।

यह भी देखा जा सकता है कि शापुर प्रथम ने ईसाई धर्म के अनुयायियों का बहुत समर्थन

किया। एक किंवदंति के अनुसार वरहरान द्वितीय (276-293 सी ई) ने बाद में ईसाई धर्म को अपना लिया था। हालांकि दस्तावजों में ऐसा पाया गया है कि इसने ईसाईयों का उत्पीड़न किया था। चौथी शताब्दी सी ई में ईसाईयों को मज़दाई पादरियों द्वारा सताया गया। यह सीरियाई भाषा में *एक्ट्स ऑफ द पर्शियन मार्टिअर्स* नामक ग्रंथ में दर्ज है। यह ग्रंथ ईरान में ईसाईयों के व्यवहार के बारे में भी जानकारी देता है। धर्मशास्त्र के नए अध्ययन केन्द्र स्थापित हुए। महत्वपूर्ण अध्ययन केन्द्रों में से एक गुंडेसपुर में था। जब धर्मशास्त्र की कई संस्थाएं बंद हो गईं तब कई शिक्षक गुंडेसपुर चले गए। इस कारण ईरान में बड़े पैमाने पर अरस्तुवाद का प्रवेश हुआ। एथेन्स की धार्मिक संस्था को सम्राट जस्टीनियन द्वारा बंद करा दिया गया जिसके कारण यहां के सात शिक्षक गुंडेसपुर में चले आए। दर्शनशास्त्र के अतिरिक्त गुंडेसपुर में चिकित्सा के प्रति भी महत्वपूर्ण रूझान था जो इस काल में धर्मशास्त्र के काफी निकट होता था। स्रोतों से ज्ञात होता है कि शापुर द्वितीय के शासन काल के दौरान चिकित्सक और धर्मशास्त्री दोनों ही के द्वारा दैनिक कार्य का संचालन करने से पहले धार्मिक कार्य कलाप को पूरा करना पड़ता था।

हालांकि, सासानी काल के दौरान सबसे महत्वपूर्ण धर्म ज़रतुश्त ही था। अर्दशीर प्रथम के सिंहासन पर बैठने के बाद राज्य और धर्म के बीच संबंध नज़दीकी और एक हो गये थे। इस काल से प्राप्त सिक्कों से राजा और ज़रतुश्त मत के बीच निकट संबंध की एक झलक देखने को मिलती है, जहां अर्दशीर प्रथम का चित्र सिक्के की एक ओर तथा अग्नि को दूसरी ओर दर्शाया गया है (**चित्र 13.7**)। अग्नि राजपद का प्रतिनिधित्व करती थी जो साम्राज्य के शासन काल के प्रत्येक शासक के प्रारंभ को प्रतिबिम्बित करती थी। अर्दशीर प्रथम ने धर्म के प्रमुख देवता अहुरा मज़दा को नक्काशियों में चित्रित करवाया। अहुरा मज़दा को सासानी साम्राज्य के अन्य शासकों को मानाभिषेक (investiture) अंगूठी देते हुए भी चित्रित किया गया है (**चित्र 13.15**)। कभी तो शासक खुले रूप से ज़रतुश्त मत पर आश्रित होते दिखते हैं और कभी दूसरे धर्मों पर अत्याचार करते हुए और अन्य धर्मों को अपने समाज में स्वीकार करते हुए दिखाई देते हैं।

धर्म के मुख्य देवी-देवता अहुरा मज़दा, मिहर, अनाहिता और वरहरान थे। अहुरा मज़दा सभी देवताओं में उच्चतम माने जाते हैं जिन्होंने सभी शासकों को शासन करने के अधिकार से विभूषित किया। आहुरा मज़दा की उपस्थिति, जिनका नाम सूर्य के ऊपर रखा गया था, संभवतः शक-कुषाणों द्वारा सूर्य को दिए गए महत्व के कारण हो सकता है, जो भारत तक सूर्य उपासना लेकर आए थे। देवता मिहर को रथ के साथ दिखाया जाता है। अनाहिता पानी की देवी थी। देवी-देवताओं में अंतिम वरहरान का नाम बड़ी संख्या में सासानी शासकों ने अपनाया। ज़रतुश्त मत में वरहरान नाम अग्नि को भी दिया गया था। यहां पर अन्य देवता भी थे हालांकि, वे उतने अधिक लोकप्रिय नहीं थे जितने ये चार थे।

साम्राज्य में नियमित व्यक्ति विशेषों के लिए धार्मिक शिक्षा पुजारियों द्वारा सिर्फ अपने पुत्रों को ही दी जाती थी ताकि वे उनके बाद उनका स्थान ले सकें। हालांकि, समुदाय में प्रत्येक व्यक्ति को आनुष्ठानिक संस्कार द्वारा धर्म में सम्मिलित कराया जाता था जो कि बच्चे के सात से दस वर्ष की आयु के बीच में होता था। बच्चे को प्रार्थनाओं का वाचन कराया जाता था तथा अन्य अनुष्ठानों के साथ-साथ उसे धर्म अंगीकार करने की स्वीकृति भी करनी होती थी।

प्रत्येक व्यक्तिविशेष को जीवन भर नियमित रूप से पुजारियों से विमर्श करना पड़ता था। विभिन्न प्रकार के शुद्धिकरण के समारोह किए जाते थे जिनमें विवाह से पूर्व, बच्चे के जन्म के पश्चात्, मृत्यु के पश्चात् या समारोहों के पश्चात् और वर्ष के अन्तिम दस दिन मृतक को याद करना सम्मिलित थे। *यासना* नामक अनुष्ठान या बलि अग्नि के सामने उसी स्थान पर हो सकती थी जहां पर समारोह किया जाना हो। यजमान को इसके लिए भुगतान करना पड़ता था जिसे 'आत्मा की प्रतिष्ठापना' कहा जाता था। अग्नि को विशेष स्थान दिया जाता

था ताकि उसमें भेंट आसानी से दी जा सके और वह स्वायत्त सत्ता लगे। सिक्कों के पीछे उसके चित्रण से स्पष्ट होता है कि शासकों के लिए अग्नि बहुत प्रमुख थी। हालांकि, अन्य आमजन भक्त अग्नि को केवल दूर से देख सकते थे। वे प्रदक्षिणालय में अग्नि कुंड के चारों ओर प्रदक्षिणा कर सकते थे। इनके धर्म में अग्नि को बहुत महत्व मिला। इसे सर्वोपरि देखा गया और जिसका कोई भी अन्य प्रतिद्वन्दी नहीं हो सकता था। जलती हुई अग्नि में या दुबारा जलाई गई अग्नि में बड़ी लपट को मिलाया नहीं जा सकता था। केवल जलते हुए अंगारों को मिलाया जा सकता था। यद्यपि उस समय इस संस्कार का सासानियों के अंतर्गत बहुत महत्वपूर्ण स्थान था, लेकिन वर्तमान समय में अब पारसी इसका अनुकरण नहीं करते।

बोध प्रश्न-4

1) सासानियों का ईसाईयों के प्रति क्या रवैया था?

....

....

....

....

....

2) सासानियों के अंतर्गत धर्म के मुख्य पहलुओं पर चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

....

3) सासानी साम्राज्य में सिक्कों की क्या भूमिका थी? धर्म और अर्थव्यवस्था के संदर्भ में इसकी चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

....

13.10 सारांश

इस इकाई में हमने सासानिद साम्राज्य के बारे में जानकारी प्राप्त की, कैसे उसका विस्तार हुआ और कैसे वह एक मुख्य ताकत के रूप में विकसित हुई। पार्थियनों के बाद, सासानी शक्ति में अर्दशीर प्रथम के समय से लेकर खुसरो प्रथम के समय तक वृद्धि हुई। उन्हें बहुत से समूहों के साथ बड़ी संख्या में सैन्य अभियानों से गुज़रना पड़ा। विशेष रूप से बाइज़ेंनटाइनों और मज़दाकाइटों के साथ संघर्ष प्रमुख थे। सासानियों ने बहादुरी से लड़ाई की, जिसमें कभी वे जीते तो कभी वे हारे। खुसरो प्रथम के शासन में कराधान और सेना में सुधार हुए जिसे बड़ी संख्या में उसकी सैन्य विजयों के रूप में देखा जा सकता है। सासानियों

द्वारा इस्तेमाल किये गये हथियारों में भी बदलाव आया और संभवतः वह हथियार उनकी ज़रुरतों के अनुकूल नहीं थे। उन्होंने बहुत से हथियार रोमनों से भी अंगीकृत किये थे, जैसे मोटे शहतीर (battering ram)।

समय के साथ, सासानियों ने कला, वास्तुकला, व्यापार और मुद्रा निर्माण के क्षेत्रों में भी अपनी छाप छोड़ी। सिक्के कलाकृतियों के तिथिक्रम निर्धारण में मदद करते हैं। हालांकि शुरुआत में सिक्कों पर की गई नक्ककाशी और प्रतिमाएं समान प्रकार की गुणवत्ता दर्शाती हैं, जो कि बाद के सिक्कों में देखने को नहीं मिलती क्योंकि अब मूर्तिकला ज़्यादा विकसित प्रकार की कला बन गई थी। खुदाई में मिले कुछ ध्वंसावशेषों के अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सासानियों द्वारा निर्मित संरचनाएं अद्वितीय थीं और अपने समकालीनों में से किसी को भी स्पर्धा दे सकती थीं। उन्होंने बंद मेहराबदार-छतों वाले कमरों के साथ खुली जगहों के उपयोग की नई शैलियों को जन्म दिया। संभवतः उनका सबसे प्रमुख योगदान वास्तुकला के क्षेत्र में स्क्विन्चों (squinch) का उपयोग कर गुंबदों का निर्माण करना था।

धर्म ने साम्राज्य के विकास में, जिसने शासकों को वैद्यता प्रदान की, एक मुख्य भूमिका निभाई थी। हालांकि वहां पर बड़ी संख्या में धार्मिक अत्याचार भी हुए और ज़रतुश्त धर्म में बहुत से बदलाव और परिवर्तन भी इस कारण किये गए थे। कानूनी और धार्मिक ग्रंथ एक दूसरे पर बहुत ज़्यादा निर्भर थे, इस कारण कानून इस हद तक धार्मिक नैतिकता पर निर्भर था कि धर्म विवादों पर निर्णय लेने का आधारभूत माध्यम बन गया था।

13.11 शब्दावली

नस्क् स **(Nasks)** : *अवेस्ता*, ज़रतुश्तों का धार्मिक मूलपाठ, के उप-भाग में करीब 21 *नस़्क़* हैं।

पपायरी **(Papyri)** : पपायरस का बहुवचन, लंबे पौधे जैसी घास जिससे कागज की किस्म बनाई जाती है।

स्क्विन्च **(Squinch)** : एक चौकोर कक्ष के आंतरिक कोणों में सीधी या मेहराबी संरचना जिससे कि चौकोर कक्ष पर गुंबद, को संभालने के लिए संरचना बन सके।

गच्चीकारी **(Stucco)** : दीवारों की सतहों की कोटिंग करने के लिए या वास्तुकला में सजावट के लिए इस्तेमाल होने वाला एक महीन प्लास्टर।

13.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न-1

1) भाग 13.3 देखें

2) भाग 13.2 देखें। जवाब में यूनानी और लैटिन स्रोतों के साथ-साथ विभिन्न ईरानी और गैर-ईरानी स्रोतों पर चर्चा शामिल होनी चाहिए।

3) भाग 13.3 (साथ में उप-भाग 13.3.1 और 13.3.2) देखें

4) भाग 13.4 देखें। जवाब में बाइज़ेंनटाइन और सासानिद साम्राज्यों के बीच युद्ध और घेराबंदी पर चर्चा शामिल होनी चाहिए।

बोध प्रश्न-2

1) उप-भाग 13.5.1 देखें

2) उप-भाग 13.5.3 देखें

3) उप-भाग 13.5.2 और 13.5.4 देखें

4) भाग 13.6 देखें

बोध प्रश्न-3

1) उप-भाग 13.8.1 देखें। फिरूज़ाबाद के महल और बाद में महल निर्माण के क्षेत्र में किए गये बदलावों पर चर्चा की जा सकती है।

2) उप-भाग 13.8.2 देखें। गच्चीकारी में सजावट के रूप में विभिन्न चित्रों में इस्तेमाल, विशेष रूप से युद्ध और शिकार के दृश्यों को दर्शाया गया है। इन चित्रों में सजावट के लिए सुंदर पुष्प और ज्यामितीय पैटर्नस दर्शाये गये हैं। विशाल शिल्प मूर्तियां सासानिद कला का एक और मुख्य तत्व थीं।

3) उप-भाग 13.8.3 देखें

4) भाग 13.7 देखें

बोध प्रश्न-4

1) भाग 13.9 देखें। जवाब में सासानिद साम्राज्य के दौरान विभिन्न धर्मों के बीच संघर्ष के पहलू पर चर्चा शामिल होनी चाहिए।

2) भाग 13.9 देखें

3) भाग 13.6 और 13.9 देखें। सिक्के साम्राज्य के विभिन्न शासकों के शासनकाल के अध्ययन का मुख्य स्रोत हैं।

13.13 संदर्भ ग्रंथ

हरमन, जोआचिम एवं एरिक जुरचर (संपा.). (1996). *हिस्टी ऑफ हयुमैनिटी खंड* III. *साइन्टिफिक एंड कलचरअल डिवेलॅप्मॅन्ट.* पेरिसः यूनेस्को.

यारशेटर, अहसान (संपा.). (2008). *कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ ईरान.* खंड III. भाग I और II. कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

अंसारी, अली. (2014). *ईरानः वेरी शॉर्ट इन्ट्रोडक्शन.* ऑक्सफ़ोर्डः ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

13.14 शैक्षणिक वीडियो

द सासानिद एम्पायरः बी बी सी रेडियो 4
https://www.bbc.co.uk/programmes/b008g2x5

बाइज़ेंन्टाइन-सासानियन वॉर्स
https://www.youtube.com/watch?v=5et5qmbATYc

292 blank